हिन्दी पुष्पमाला
VII

लेखक :

इबोहल सिंह काङ्जम

देवराज

रघुमणि शर्मा

लनचेनबा मीतै

बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एड्यूकेशन
मणिपुर

Published By :
The Secretary ,
Board of Secondary Education,
Manipur

© Board of Secondary Education, Manipur

1st Edition	:	2011
2nd Edition	:	2012
3rd Edition	:	2014
4th Edition	:	2016
Revised Edition	:	September,2017
Reprint	:	January, 2019
Reprint	:	February, 2019
Reprint	:	October, 2019
Reprint	:	January, 2020
Reprint	:	August, 2020

Copies **: 8,000**

Price: 80 /-

Printed at : ***P.K. Printing Press, Sagolband Meino Leirak, Imphal***

सचिव का निवेदन

विश्व की बदलती परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए यह बोर्ड नेसनल करिक्यूलम फ्रेमवार्क-2005 के अनुसार पाठ्य पुस्तकों का निर्माण कराकर प्रकाशित करता आ रहा है। शिक्षा को उच्च स्तर तक उठाना इस बोर्ड की कोशिश रही है।

जो पुस्तकें नेसनल करिक्यूलम फ्रेमवार्क, 2000 के अन्तर्गत लिखकर प्रकाशित की गईं, उनको नये नेसनल करिक्यूलम फ्रेमवार्क, 2005 के अनुसार संशोधित तथा परिवर्धित कर समयानुकूल बनवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी लक्ष्य रखा गया है कि मणिपुरी वातावरण के साथ उनका संगत हो। इसलिए पूरी सावधानी रखवाकर पुस्तकों को फिर से तैयार करवाकर प्रकाशित किया जा रहा है। लेखकों और परीक्षण-परिमापन करने वालों के साथ बैठकर काफी गहराई तथा विस्तृत रूप से विचार-विमर्श कर पुस्तकों की कमियों और त्रुटियों का परिमार्जन कराकर पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक के निर्माण में और छात्रों के द्वारा व्यवहार करवाने में जो समस्याएँ आईं उसका समाधान किया गया है । उसके बाद जो परिणाम सामने आए उन कसौटियों पर मैंने लेखकों और सम्बन्धित व्यक्तियों से परामर्श किया है। इस कार्य में लेखकों तथा सम्बन्धित सज्जनों ने जो सहयोग दिया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ ।

इस पुस्तक को और भी उत्कृष्ट बनाने के लिए जो भी सुझाव सुधीजनों की तरफ से आएंगे उनका सादर स्वागत किया जाएगा। अत: रचनात्मक सुझाव और परिमार्जन के लिए विद्वज्जन अपना सहयोग प्रदान करें ।

डा. चीथूङ मरी थोमास
सचिव

नवम्बर, 2010

गांधीजी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ:

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता रहा है।

मो. क. गांधी

प्रस्तावना

यह प्रसन्नता का विषय है कि शिक्षा सामाजिक चिन्तन के केन्द्र में स्थान पा गई है। इससे पठन-पाठन और अध्ययन-अध्यापन के पूरे ढाँचे में आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास तेज हो गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के प्रति नई जागरूकता ने यह जता दिया है कि अब हमें प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक शिक्षा को 'छात्र-केन्द्रित' रूप प्रदान करना होगा और उसे मानव-ज्ञान के नए क्षितिजों से सज्जित करना होगा। ऐसा करके ही शिक्षा व्यक्तित्व के समग्र विकास में सार्थक भूमिका निभा सकेगी।

सातवीं कक्षा की पाठ्य सामग्री तैयार करते समय जिस न्यूनतम स्तर को उपलब्ध करने का लक्ष्य सामने था, उसकी मुख्य बातें निम्नांकित हैं —

— आंचलिक और राष्ट्रीय जीवन की प्रमुख समस्याओं पर केन्द्रित वार्तालाप को सुनकर समझ लेना।

— विद्यालय स्तर के समारोहों में अपने विचार प्रकट करना।

— परिचित व्यक्ति के साथ वार्तालाप कर सकना।

— पाठ्य सामग्री का द्रुत वाचन करना।

— सुलेख वाले हस्तलिखित पत्रों को पढ़ सकना।

— संयुक्ताक्षर वाले कठिन शब्दों का अनुलेखन और श्रुत-लेखन करना।

— लेखन में विराम-चिह्नों का सही प्रयोग करना।

— रेडियो, दूरदर्शन और समाचार-पत्रों के मुख्य समाचारों का केन्द्रीय भाव समझ लेना।

— आदरार्थक प्रयोगों की जानकारी और उनके उपयोग का ज्ञान प्राप्त करना।

— अभिव्यक्ति को व्यावहारिक बनाने के लिए सामान्य रूप से प्रचलित मुहावरों का प्रयोग करना।

इसके अतिरिक्त छात्रों को विविध विषयों की जानकारी देकर उन्हें समाज और राष्ट्र से जोड़ सकने वाली सामग्री का निर्माण तथा उसी के अनुरूप भाषिक गठन अपनाने का लक्ष्य भी था ।

यह पूरा प्रयास व्यक्ति के माध्यम से समाज के निर्माण की साधना का एक सोपान है, किन्तु यह सफलता अध्यापकों की निष्ठा, परिश्रम और दृष्टि-सम्पन्नता पर आधारित है। सातवीं कक्षा तक आते-आते न केवल छात्र और अध्यापक के मध्य समझदारी भरा रिश्ता बनने लगता है, बल्कि कक्षा में अध्यापन का वातावरण भी गम्भीरतायुक्त हो जाता है। ऐसे में आवश्यक है कि अध्यापक अधुनातन तकनीकों के सहारे छात्रों के साथ सटीक संवाद की पद्धतियाँ विकसित करें।

वे उन्हें दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों में से कुछ को चुन कर देखने और अगले दिन विकसित करें। वे उन्हें दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों में से कुछ को चुन कर देखने और अगले दिन कक्षा में आकर उनपर चर्चा करने लिए प्रेरित कर सकते हैं, कक्षा में पढ़ाई गई सामग्री के आधार पर प्रश्न पुछने का अभ्यास करा सकते हैं, निर्धारित कविताओं की कक्षा में आवृत्ति और छात्रों द्वारा ही उनके मूल भाव की अभिव्यक्ति पर बल दे सकते हैं और छात्रों को पुस्तकालय के अधिकाधिक उपयोग की प्रेरणा दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी अनेक पद्धतियाँ हैं, जिनका सदुपयोग अध्यापकों की सक्रियता से सम्भव है। यदि उनके सामने लक्ष्य स्पष्ट है तो वे उसे पाने के मार्ग स्वयं ढूँढेंगे और छात्रों को भी नए मार्गों की तलाश में बराबर का भागीदार बनाएँगे।

लेखक-मण्डल सभी अध्यापकों से सहयोग की आशा रखता है। साथ ही वह उनके सुझावों के स्वागत के लिए भी तत्पर है।

-लेखक मण्डल

पुनर्विलोकन व परिशोधन-कर्ता:

रघुमणि शर्मा

एस. लोकेन्द्र शर्मा

अन्तिम निर्णायक:

इबोहल सिंह काङ्जम

सीखने के प्रतिफल

कक्षा सात **हिन्दी**

बच्चे –

- किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते, परिचर्चा करते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं।
- विभिन्न स्थानीय सामाजिक मुद्दों एवं प्राकृतिक घटनाओं के प्रति अपनी तार्किक प्रतिक्रिया देते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की सरसरी तौर पर तथा बारीकी से जाँच करते हुए किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री; जैसे- शब्दकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का प्रयोग करते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं; जैसे- किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग- आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल-रेल जैसे प्रयोग।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से समझते/कहते/लिखते/अभिव्यक्त करते हैं; जैसे- अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत।
- हिन्दी भाषा में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे कहानी, इंटरनेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि को समझकर पढ़ते हैं और उस पर अपनी पसंद-नापसंद के पक्ष में लिखित/ब्रेल/सांकेतिक भाषा में अपने तर्क रखते हैं।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं।
- विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम-चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों; जैसे- काल, क्रिया, विशेषण, शब्द-युग्म आदि का प्रयोग करते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों के बारे में मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।
- भित्ति पत्रिका/पत्रिका आदि के लिए तरह-तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उनका संपादन करते हैं।

B6Y5Q2

पाठ-सूची

१. मीठी तान 1
२. किसान के मित्र और शत्रु 6
३. कवि कमल 12
४. हरी सब्जियाँ, फल और स्वास्थ्य 18
५. डायरी के दो पन्ने 24
६. शगोल-काङ्जै 29
७. कमल को देख 34
८. चुनाव का पर्व 38
९. इनाम 46
१०. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ 52
११. स्वतन्त्रता-दिवस 58
१२. मणिपुर के कुछ जनजातीय त्योहार 65
१३. जेनी और माइकल 71
१४. मणिपुर की सुन्दर धरती 78
१५. राजा पामहैबा 82
१६. खोङ्जोम युद्ध 90
१७. हमारी संसद 98
१८. मीराबाई 106
१९. कबीर के दोहे 112
२०. सुभाषचन्द्र बोस 116
२१. मैं कम्प्यूटर हूँ 124
२२. सवाल 131
नागरिकों के मूल कर्तव्य 140
राष्ट्र-गान 142

Q1X2G1

पाठ-एक

मीठी तान

चोटी, झरना, संगीत, माधुरी, नष्ट, सरिता, गर्जन, संकट, जरूरत, न्याय-मार्ग, अविकल, टकराना।

पर्वत की हर चोटी हम से।
ऊँचा उठने को कहती है।

झरने की संगीत माधुरी।
कहती, तुम भी ऐसा गाओ।।
भेद-भाव हो नष्ट जगत में।
ऐसी मीठी तान सुनाओ।।

सरिता की धारा भी हर पल।
आगे बढ़ने को कहती है।

बादल का गर्जन कहता है।
संकट से टकराना सीखो।
पड़े जरूरत न्याय-मार्ग पर।
खुशी-खुशी मिट जाना सीखो॥
अविकल बहती हवा सभी से।
चलते रहने को कहती है॥

प्रश्न-अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

झरना	=	पहाड़ से नीचे गिरने वाला पानी का सोता, निर्झर।
माधुरी	=	मधुरता, मिठास।
सरिता	=	नदी, धारा।
संकट	=	कठिनाई, मुसीबत, खतरा।
न्याय-मार्ग	=	इन्साफ का रास्ता।
अविकल	=	शान्त, व्यवस्थित।

२. उत्तर दीजिए :

(क) पर्वत की चोटी हम से क्या कहती है ?
(ख) झरने की संगीत माधुरी क्या कहती है ?
(ग) सरिता की धारा क्या कहती है ?
(घ) बादल का गर्जन क्या कहता है ?

(ङ) बहती हवा क्या कहती है ?

(च) 'मीठी तान' कविता का मूल भाव लिखिए।

(छ) पाठ में उल्लिखित प्रकृति की जिन चीजों के अतिरिक्त और तीन चीजों के नाम लिखिए जो हमें प्रोत्साहित करते हैं और शिक्षाप्रद होते हैं।

(ज) पाठ में उल्लिखित पर्वत, झरना, सरिता, बादल और बहती हवा दिखनेवाला एक चित्र तैयार करके कक्षा में दिखाइए।

(झ) पर्वत, झरना, सरिता, बादल और बहती हवा के अभाव में सांसारिक जीव पर क्या असर पड़ सकता है? लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

चोटी ....

माधुरी ....

नष्ट ....

तान ....

पल ....

गर्जन ....

संकट ....

न्याय-मार्ग ....

जरूरत ....

अविकल ....

4. नीचे लिखी पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए :

बादल का गर्जन कहता है।
संकट से टकराना सीखो।
पड़े जरूरत न्याय-मार्ग पर।
खुशी-खुशी मिट जाना सीखो॥

....

....

....

....

....

5. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

प्रत्येक मूल ध्वनि मुख के अलग-अलग अंगों की टकराहट से उत्पन्न होती है। जो ध्वनि जिस-जिस अंग की टकराहट से उत्पन्न होती है, वह उस ध्वनि का उच्चारण-स्थान है।

(क) नीचे दिए उच्चारण-स्थान तालिका को ध्यान से देखिए और सही उच्चारण का प्रयास कीजिए:

उच्चारण-स्थान		नाम
कण्ठ	अ,आ,क्,ख्,ग्,घ्,ङ्,ह	कण्ठ्य
तालु	इ,ई,च्,छ्,ज्,झ्,ञ्,य्,श्	तालव्य
मूर्धा	ऋ,ट्,ठ्,ढ्,ड्,ण्,र्,ष्	मूर्धन्य

दन्त	त्,थ्,द्,ध्,न्,ल्,स्	दन्त्य
ओष्ठ	उ,ऊ,प्,फ्,ब्,भ्,म्,व्	ओष्ठ्य
नासिका	ङ्,ञ्,ण्,न्,म्, (ं)	नासिक्य
कण्ठ तालु	ए,ऐ,	कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ	व्	दन्तोष्ठ्य

(ख) " 'अ' ध्वनि/वर्ण का उच्चारण स्थान कण्ठ है। इसे कण्ठ्य कहते हैं"। इसी प्रकार 'ग' 'ऐ', श्, छ, स, ष, फ्, ए, औ' वर्णों ध्वनियों के उच्चारण-स्थान और नाम लिखिए।

संकेत :

ङ्, ञ, ण्, न्, म्, वर्णों/ध्वनियों के दो अलग-अलग उच्चारण-स्थान होते हैं। जैसे

ङ् = कण्ठ और नासिका
ञ् = तालु और नासिका
ण् = मूर्धा और नासिका
न् = दन्त और नासिका
म् = ओष्ठ और नासिका
व् = दन्त और ओष्ठ

****

D5B7R5

पाठ-दो

किसान के मित्र और शत्रु

मजदूर, हल, सिंचाई, खाद, इन्तजाम, मानसून, बर्बाद, चट, मानवता, जोतना, बोना।

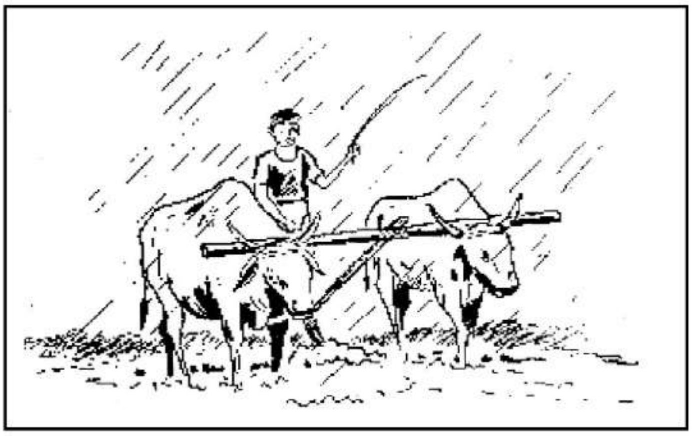

विश्व में ऐसा कोई देश नहीं, जहाँ किसान, मजदूर और व्यापारी न हों। किसान का काम है, हल चलाना और जमीन जोतना। वह जमीन जोत कर खेत तैयार करता है और उसमें धान, गेहूँ , गन्ना तथा अन्य फसलें बोता है। धीरे-धीरे अन्न के पौधे बड़े हो जाते हैं। उनपर हरियाली छा जाती है। किसान अपना हरा-भरा खेत देख कर फूला नहीं समाता।

सभी का पेट भरने वाले किसान के मित्र और शत्रु कौन-कौन हैं? बादल किसान की आँखों का तारा है। बादल पानी बरसाता है। उससे फसल की सिंचाई होती है और अधिक अन्न पैदा होता है। अत:बादल किसान का प्रथम मित्र है।

किसान के दूसरे मित्र हैं — उसके दो बैल और मजबूत हल। वह हल-बैल के सहारे जमीन जोतता है और फसल उगाता है। उसके अन्य मित्र हैं, उसके उत्पादन को बड़े पैमाने पर खरीदने वाले। फसल की खरीदारी से उसे पैसे मिलते हैं। पैसे से खाद, बीज आदि का इन्तजाम किया जाता है।

मित्र के साथ-साथ किसान के शत्रु भी कम नहीं है। कभी-कभी प्रकृति भी किसान के शत्रु बन जाती है। समय पर मानसून न आने और नियमित रूप से पानी न बरसने से किसान की बहुत हानि होती है। पानी न बरसने से जमीन सूख जाती है और सभी फसल नष्ट हो जाती है। दूसरी तरफ अधिक पानी बरसने से बाढ़ आ जाती है और फसल पानी में डूब कर बर्बाद हो जाती है।

कीड़े, चूहे और पशु-पक्षी भी उसके शत्रु हैं। वे किसान की पकी फसल को चट कर जाते हैं।

इन सब के बावजूद किसान अन्न उपजा कर सब का पेट भरता रहता है। वह मानवता का सच्चा सेवक है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

मजदूर = शरीर-श्रम में जीविका चलाने वाला, मजदूरी पर काम करने वाला।

हल = खेत जोतने का एक औजार, लांगल।

हरियाली = हरा रंग, हरे पेड़-पौधों का ढेर।

सिंचाई = खेत, पेड़ आदि में पानी डालने का काम।

इन्तजाम = व्यवस्था, प्रबन्ध करना।

बाढ़ = नदी आदि में जल का सीमा से अधिक बढ़ना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) किसान का काम क्या है?

(ख) बादल को किसान का प्रथम मित्र क्यों कहा जाता है?

(ग) किसान किसके सहारे जमीन जोतता है?

(घ) किसान के मित्र और शत्रु कौन-कौन हैं?

(ङ) प्रकृति कैसे किसान की शत्रु बन जाती है?

(च) किसान को क्यों मानवता का सच्चा सेवक कहा जाता है?

(छ) जमीन जोतने का काम बैल के अलावा किस-किसके सहारे किया जाता है? लिखिए।

(ज) किसान जैसा मानवता के सच्चे सेवकों के पाँच नाम लिखिए।

(झ) इस पाठ में किसान के बहुत से मित्रों और शत्रुओं के नाम उल्लेख किए हैं, इसी आधार पर मानव समाज के मित्रों और शत्रुओं के तीन-तीन नामों का उल्लेख कीजिए।

(ञ) क्या आप मानते हैं कि हम सब के भी मित्र और शत्रु हैं?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

हरियाली ....

सिंचाई ....

मजबूत ....

खरीदारी...

इन्तजाम...

नियमित ....

हानि ....

बर्बाद ....

प्रकृति ....

मानवता ....

4. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए :

धीरे-धीरे, कौन-कौन, हरा-भरा, पशु-पक्षी

उत्तर

....

....

....

....

5. प्रस्तुत पाठ से उद्धृत मुहावरे अर्थ सहित दिए जा रहे हैं और उनको वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

फूला नहीं समाता (अर्थ — बहुत खुश होना)

....

....

आखों का तारा (अर्थ — बहुत प्यारा)

....

....

6. खाली जगह भरिए :

(क) धीरे-धीरे .... बड़े हो जाते हैं।

(ख) बादल ....मित्र है।

(ग) वह.. जोतता है।

(घ) मित्र के साथ-साथ .... कम नहीं है।

(ङ) पानी न ....सुख जाती है।

7. सही कथन चुनकर (✓) का निशान लगाइए :

(क) किसान जमीन जोत कर खेत तैयार करता है। ☐

(ख) दो बैल किसान के मित्र है। ☐

(ग) पशु-पक्षी भी किसान के मित्र हैं। ☐

(घ) किसान अन्न उपजा कर सब का पेट भरता है। ☐

8. पढ़िए और समझिए :

और, तथा, एवं, या, अथवा, व, लेकिन, परन्तु, आदि संयोजक/विभाजक शब्द द्वारा दो या अधिक पदों, पदबन्धों या उपवाक्यों को जोड़ा जाता है; वे शब्द समुच्चय बोधक अव्यय हैं। जैसे :

मैं सुबह स्कूल जाता हूँ और शाम को घर वापस आता हूँ।

तुम जाओगे या मैं ?

9. प्रत्येक दो वाक्यों को ''और'' से जोड़ कर लिखिए :

(क) तोम्बा चाय पीता है। तोम्बा समोसा भी खाता है।

....

(ख) मैं रोज पुस्तकालय जाता हूँ। मैं वहाँ पुस्तक पढ़ता हूँ।

....

(ग) हम सुबह पढ़ते हैं। हम शाम को खेलते हैं।

....

(घ) माँ खाना पकाती है। माँ रोटी भी बना सकती है।

....

(ङ) तुम गाना गाते हो। तुम तबला भी बजाते हो।

....

****

पाठ-तीन

कवि कमल

चिन्तित, कुशलता, निश्चिन्त, तस्वीर, खानदान, प्रवृत्ति, प्रभाव, मेधावी, उत्तीर्ण, चिकित्सा-विज्ञान, प्रकाशन, स्फुट, शीर्षक, मरणोपरान्त, देहान्त, अल्पायु, हृदयगति, प्रतीक्षा।

इम्फाल,

1 सितम्बर, 2004

प्रिय उपाध्याय,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र मिला। बहुत दिनों से एक भी पत्र न मिलने के कारण मैं तुम्हारे बारे में सोच कर चिन्तित हो गया था। अब इस पत्र से तुम्हारी कुशलता का समाचार पाकर निश्चिन्त हुआ। पत्र डालने में इतनी देर न किया करो।

तुम मणिपुरी साहित्य के किसी नवजागरणकालीन कवि के बारे में जानना चाहते हो। इस जवाबी-पत्र में मैं कवि कमल के बारे में संक्षेप में लिख रहा हूँ, जो नवजागरणकालीन मणिपुरी साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक थे। साथ में उनकी एक तस्वीर भी भेज रहा हूँ।

कवि कमल का जन्म 7 मार्च, 1899 ई० में लाङ्थबान-कुंज नामक गाँव में हुआ था। वे लमाबम खानदान में पैदा हुए थे। उनके पिता का नाम लमाबम यात्रा सिंह था और माता का नाम

लैरिक देवी। उनके पिता यात्रा सिंह धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इसका प्रभाव कमल के जीवन पर पड़ा।

कमल ने नाओरेम लैकाइ एल.पी. स्कूल, मोइराङ्खोम यू.पी. स्कूल, जॉनस्टोन स्कूल एवं शिलांग सरकारी हाईस्कूल में स्कूली शिक्षा प्राप्त की। वे एक मेधावी छात्र थे। शिलांग सरकारी हाईस्कूल से कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने डिब्रूगढ़ के बेरी ह्वाइट मेडिकल स्कूल से चिकित्सा-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। वहाँ उन्होंने पाँच साल का चिकित्सा-विज्ञान का कोर्स पूरा किया। अपने छात्र-जीवन में ही उन्होंने छोटी-छोटी कविताएँ रचीं और ''जागरण'' आदि तत्कालीन पत्रिकाओं में प्रकाशित कराईं। प्रथम मणिपुरी उपन्यास ''माधवी'' की रचना भी इसी समय हुई। मेडिकल स्कूल से एल.एम.पी. उत्तीर्ण करने के बाद मणिपुर लौट आए और सब-एसिस्टेण्ट सर्जन के रूप में सरकारी नौकरी करने लगे।

नौकरी लगने के बाद सन् 1930 में उनके उपन्यास ''माधवी'' का प्रकाशन हुआ। उनकी स्फुट कविताओं के संग्रह ''लै परेङ्'' अर्थात् पुष्प-माला का प्रकाशन भी हुआ। उन्होंने कहानी और नाटक भी लिखे। उनके दवारा लिखी कहानी का शीर्षक है - 'ब्रजेन्द्रगी लुहोङबा' अर्थात् ब्रजेन्द्र का विवाह। उनका ''देवयानी'' शीर्षक नाटक मरणोपरान्त प्रकाशित हुआ। उनकी रचनाओं की विशेषता उनकी भाषा की कोमलता है।

कवि कमल का देहान्त अल्पायु में ही हो गया था। 6 फरवरी 1934 ई० को हृदयगति रुक जाने से उनकी मृत्यु हुई। उस समय उनकी आयु सिर्फ छत्तीस वर्ष की थी।

अब मैं इस पत्र को यहाँ समाप्त कर रहा हूँ। माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम।

तुम्हारे अगले पत्र की प्रतीक्षा में।

तुम्हारा मित्र
असेम चाओबा सिंह

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

चिन्तित	=	चिन्ता से युक्त।
कुशलता	=	ठीक-ठाक होना।
खानदान	=	कुल, वंश, घराना।
प्रवृत्ति	=	मन का किसी विषय की ओर झुकाव।
मेधावी	=	बुद्धिमान।
उत्तीर्ण	=	परीक्षा में पास होना।
चिकित्सा-विज्ञान	=	रोग-निवारण या इलाज का विज्ञान।
तत्कालीन	=	उसी समय का।
स्फुट	=	कटा हुआ, विकसित, फुटकर।
मरणोपरान्त	=	मरने के बाद।
देहान्त	=	मर जाना।
अल्पायु	=	कम आयु।
प्रतीक्षा	=	इन्तजार।

2. उत्तर दीजिए :

(क) चाओबा किसके नाम पत्र लिखता है?

(ख) कवि कमल का जन्म कब हुआ था?

(ग) कमल के पिता कैसे व्यक्ति थे?

(घ) कमल ने कहाँ से चिकित्सा-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की?

(ङ) कब से कमल ने कविताएँ रचनी शुरू की?

(च) कमल ने किस पद पर नौकरी की?

(छ) प्रथम मणिपुरी उपन्यास कौन-सा है और उसका प्रकाशन कब हुआ?

(ज) कमल की रचनाएँ कौन-कौन-सी हैं?

(झ) ''देवयानी'' कब प्रकाशित हुई?

(ञ) कमल की रचनाओं की विशेषता क्या है?

(ट) मृत्यु के समय कमल की आयु कितनी थी?

(ठ) डॉ. कमल के-बारे में पाठ से आगे कुछ विशेष जानकारी जोड़कर उनकी जीवनी लिखिए।

(ड) नवजागरण कालीन मणिपुरी साहित्य के कुछ प्रमुख कवियों के नाम अपने अध्यापक से पूछ कर लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

चिन्तित ....

निश्चिन्त ....

प्रवृत्ति ....

मेधावी ....

प्रकाशन ....

मरणोपरान्त..

प्रतीक्षा ....

अल्पायु ....

हृदयगति ....

देहान्त..

4. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) कमल के पिता यात्रा सिंह.. ।
(ख) अपने छात्र-जीवन में ही .... ।
(ग) उनकी स्फुट कविताओं के .... ।
(घ) उनका ''देवायानी'' शीर्षक .... ।
(ङ) कवि कमल का देहान्त.. ।

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :

(क) कमल नवजागरणकालीन मणिपुरी साहित्य के प्रमुख कवि थे।
(ख) कमल का जन्म लमाबम खानदान में हुआ था।
(ग) कमल मेधावी छात्र नहीं थे।
(घ) ''माधवी'' प्रथम मणिपुरी उपन्यास है।
(ङ) कमल ने ''ब्रजेन्द्रगी लुहोङ्बा'' नामक नाटक लिखा था।

6. पढ़िए और समझिए :

'राजा का कुमार', 'दान में वीर', 'पाठ के लिए शाला' आदि शब्द समूहों को संक्षिप्त करके या मिला कर क्रमश: राजकुमार, दानवीर, पाठशाला आदि नए सार्थक शब्द निर्मित किए जाते हैं। शब्द निर्माण की इस प्रणाली को समास कहा जाता है। अब निम्नलिखित पदबन्धों का सामासिक शब्द लिखिए :

मरने के उपरान्त =
इच्छा के अनुसार =
जनता का प्रतिनिधि =

स्कूल की शिक्षा =
हृदय की गति =
कार्य की पद्धति =
चिकित्सा का विज्ञान =

6. पढ़िए और समझिए और याद रखिए :

''तुम मणिपुरी साहित्य के किसी नवजागरणकालीन कवि के बारे में जानना चाहते हो। इस जवाबी पत्र में कवि कमल के बारे में संक्षेप में लिख रहा हूँ जो उस काल के प्रमुख कवियों में से एक थे। उनके पिता का नाम लमाबम यात्रा सिंह था और माता का नाम लैरिक देवी''।

उपर्युक्त वाक्यों में ''तुम, मैं, उन'' आदि शब्द संज्ञा के बदले में प्रयोग किया गया है। अत: इन सब शब्दों को सर्वनाम शब्द कहते हैं। सर्वनाम के छ: प्रकार होतेहैं । जैसे —

सर्वनाम के प्रकार	सार्वनामिक शब्द
1. पुरुषवाचक	मैं, हम, तू, तुम, वह, वे।
2. निश्चयवाचक	यह, ये, वह, वे, ।
3. अनिश्चित	कोई, कुछ।
4. सम्बन्ध वाचक	जो... सो, जैसा... वैसा, जिसे, उसे, आदि।
5. प्रश्न वाचक	कौन, क्या, किस।
6. निज वाजक	स्वयं, स्वत:, अपने-आप

****

पाठ-चार

हरी सब्जियाँ, फल और स्वास्थ्य

पौष्टिक, सुडौल, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज, कटहल, तोंदिला, पपीता, गुर्दा, व्रण, इन्फ्लुएंजा, संतरा, पाचन-शक्ति, ज्योति, परोसना।

हरी सब्जियाँ और फल मनुष्य को नीरोग और सुखी बनाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। सभी प्राणी सब्जियाँ खाने से स्वस्थ रहते हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अलग-अलग सब्जियों में पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक तत्व मिलते हैं। कुछ सब्जियाँ तो कच्ची ही खाई जा सकती हैं, जैसे फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, सरसों के पत्ते, गाजर, मूली, भिण्डी आदि। कुछ ऐसी सब्जियाँ है, जिनके खाने से रक्त बढ़ता भी है और साफ भी होता है। रक्त बढ़ने और साफ होने से हमारा शरीर सुडौल और सुन्दर रहता है। कुछ ऐसी भी सब्जियाँ हैं, जिनके खाने से शरीर की बीमारियाँ धीरे-धीरे दूर हो जाती हैं और उठने-बैठने

की शक्ति मिलती है। यूरोप के अनेक होटलों और रेस्तराओं में नाश्ते के लिए हरी सब्जियों की पत्तियाँ परोसी जाती हैं। कुछ देशों में विशेष सब्जियों को चावल और रोटी के बदले खाया जाता है।

इस पृथ्वी पर हजारों प्रकार की सब्जियाँ और सैकड़ों प्रकार के फल होते हैं। इन्हें आहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। आहार के तत्वों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, चरबी, विटामिन, खनिज तथा पानी मुख्य हैं। कटहल खाइए, उससे तोंदीला दर्द ठीक होता है। कटहल का पेड़ भी बहुत लाभदायक होता है। उसके दूध से बहुत-सी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। उसकी जड़ के प्रयोग से गुर्दे से खून बहना बन्द हो जाता है। उसके दूध से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। उसकी पत्तियों के रस से व्रण की बीमारी ठीक हो जाती है। संतरा स्वादिष्ट होता है। संतरा खाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है, हडिडयाँ मजबूत होती हैं और पेट की जलन ठीक हो जाती है।

इस तरह हरी सब्जियों, फलों और स्वास्थ्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनके प्रयोग से व्यक्ति नीरोग रहता है और उसे लम्बी उम्र प्राप्त होती है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

नीरोग = रोग रहित, स्वस्थ।
पर्याप्त = काफी, विस्तृत, पूरा।
पौष्टिक = पुष्ट बनाने वाला, शक्तिवर्धक।
सुडौल = सुन्दर डौल, बनावट वाला, सुन्दर गठन।
आहार = भोजन, खाने की वस्तु।
चरबी = माँस के ऊपर और त्वचा के नीचे रहने वाला सफेद या हलके पीले रंग का चिकना पदार्थ।
खनिज = खान से निकला हुआ।

तोंदीला = तोंद वाला, जिसका पेट निकला हुआ हो।
गुर्दा = किडनी।
व्रण = फोड़ा, घाव, जख्म, अल्सर।
स्वादिष्ट = बहुत जायकेदार।

2. उत्तर दीजिए :

(क) हरी सब्जियाँ और फल क्या निभाते हैं?
(ख) कौन-सी सब्जियाँ कच्ची ही खाई जा सकती हैं?
(ग) क्या खाने से हमारे शरीर में रक्त बढ़ता है?
(घ) किससे हमारा शरीर सुडौल और सुन्दर रहता है?
(ङ) आहार के तत्वों में क्या-क्या होता है?
(च) कटहल खाने से क्या ठीक होता है?
(छ) पपीते के पेड़ से क्या-क्या लाभ मिलते हैं?
(ज) संतरा खाने से क्या-क्या फायदे मिलते हैं?
(झ) निम्नलिखित में से पौष्टिक तत्व वाले आहार निकाल कर लिखिए - दूध, दाल, आइस्क्रीम, केला, शर्बत, संतरा, चाय, काफी, माखन, तैल, दही, शककर ।

उत्तर :

....

....

....

....

....

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

पौष्टिक..

सुडौल..

नीरोग..

आहार..

मजबूत..

स्वादिष्ट..

जलन..

घनिष्ठ..

पाचन-शक्ति..

4. खाली जगह भरिए :

(क) सभी प्राणी--------------से-----------------रहते हैं।

(ख) इन्हें--------------------- के रूप में---------जाता है।

(ग) कटहल का------------लाभदायक----------------है।

(घ) उसके-----------------से------------निकल जाते हैं।

(ङ) इनके प्रयोग से-----------------------रहता है।

5. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और 'क' तथा 'ख' स्तंभों के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
कुछ सब्जियाँ तो	इन्फ्लुएंजा ठीक होता है।
कटहल खाइए,	हड्डियाँ मजबूत होती है।
कटहल के दूध से	कच्ची ही खाई जा सकती है।
पपीते के फूल से	बहुत-सी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं।
संतरा खाने से	उससे तोंदीला-दर्द ठीक होता है।

....

....

....

....

....

6. पढ़िए और समझिए :

'से' करण कारक और अपादान कारक की विभक्ति है। करण कारक में इसका प्रयोग साधन के अर्थ में होता है और अपादान कारक में इसका प्रयोग अलग होने के अर्थ में होता है। जैसे-

करण 'से'

मैं पैंसिल से लिखता हूँ।

चाओबा बस से स्कूल जाता है।

-वह चम्मच से दवा पीता है।

अपादान कारक 'से'

पेड़ से पत्ते गिरते हैं।

वह घर से चला गया ।

पहाड़ से नदियाँ निकलती हैं।

ऊपर के उदाहरणों को पढ़कर 'से' का प्रयोग अलग-अलग अर्थवाले दो वाक्यों में कीजिए:

****

N5N2T4

पाठ-पाँच

डायरी के दो पन्ने

शौक, योजना, परेशानी, मनोरम, अभयारण्य, रोमांच, परी, झाँकना, गुजरना।

30 मार्च, 2004

मुझे बचपन से ही नए-नए स्थान देखने का शौक है। इस बार मैंने पूर्वोत्तर भारत घूमने की योजना बनाई। मेरे दोस्तों ने मना किया, ''इतनी दूर मत जाओ, परेशानी में पड़ जाओगे''। मैंने उनकी बात नहीं सुनी। यात्रा की तैयारी करके चल पड़ा ।

असम पहुँचा। यह राज्य मेरी कल्पना से भी अधिक सुन्दर निकला। भूटान, अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोराम, मेघालय और बङ्लादेश से घिरा असम प्रकृति की क्रीड़ा-स्थली है। रेल की खिड़की से झाँकते समय लगा, पहाड़ मुझे बुला रहे हैं। मैदानों में दूर तक धान की फसलें लहलहा रही थीं। चाय के बगीचों में पत्तियाँ चुनती स्त्रियाँ परियों जैसी लगती थीं।

गुवाहाटी पहुँच कर सामान होटल में रखा। हाथ-मुँह धोकर नगर-देखने निकल पड़ा। यह नगर ब्रह्मपुत्र नद के किनारे बसा है। ब्रह्मपुत्र भारत का सब से बड़ा नद है । इसी पर शराइ घाट का दो-मंजिला पुल है। ऊपर से मोटर कारें गुजरती हैं, नीचे से रेल गाड़ियाँ। पास ही गुवाहाटी विश्वविद्यालय है।

मालीगाँव के पास नीलाचल पर्वत है। इसकी चोटी पर प्रसिद्ध कामाख्या मन्दिर है। यहाँ से गुवाहटी नगर का दृश्य बहुत मनोरम लगा।

वहाँ से मैं गुवाहाटी से शिलांग जाने वाली सड़क पर घूमने आ गया। इस क्षेत्र में गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज, फिल्म स्टूडियो, गूंगों-बहरों का स्कूल, जूट मिल, साइकिल कारखाना आदि हैं। इसके बाद मैं असम के राजधानी-क्षेत्र, दिसपुर को देखने गया। गुवाहाटी नगर ने मेरा मन मोह लिया। इस नगर का पुराना नाम प्रागज्योतिषपुर है।

14 अप्रैल, 2004

दो सप्ताह से असम में हूँ। अब तक तिनसुकिया, सिल्चर, डिब्रूगढ़, नगाँव, शोणितपुर नगर देख चुका हूँ। ये सब इस राज्य के व्यापारिक और सांस्कृतिक नगर है। काजीरंगा अभयारण्य भी घूमा। यहाँ गैंडे देख कर रोमांच हो आता है। असम में हाथी भी खूब देखने को मिलते हैं।

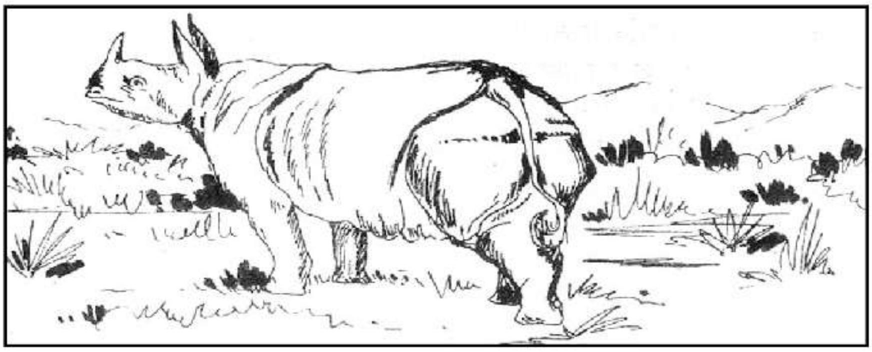

असम के गाँव भी मुझे हमेशा याद रहेंगे। यहाँ झोंपड़ियाँ बहुत सुन्दर बनती हैं। हर गाँव में एक 'नामघर' होता है। इसमें शाम को भजन-कीर्तन के साथ गाँव की समस्याओं पर विचार होता है।

इस बार गुवाहाटी के निकट हवाई-अड्डा नहीं देख पाया। सुना है, इसका नाम 'लोकप्रिय गोपीनाथ बरदोलोइ अंतरराष्ट्रीय हवाई-अड्डा' हो गया है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

शौक	=	प्रबल इच्छा, चाह।
क्रीड़ा-स्थली	=	खेल-कूद का स्थान।
लहलहा	=	हरा-भरा।
मनोरम	=	सुन्दर, मन लुभाने वाला।
अभयारण्य	=	पशु-पक्षियों के लिए सुरक्षित वन।
रोमांच	=	पुलक, रोओं का उभरना

2. उत्तर दीजिए :

(क) इस डायरी के लेखक को किसका शौक है?

(ख) लेखक ने किसकी योजना बनाई?

(ग) असम कैसी जगह है?

(घ) गुवाहाटी नगर कहाँ बसा है?

(ङ) नीलाचल पर्वत पर किसका मंदिर है?

(च) गुवाहाटी-शिलंग मार्ग पर क्या-क्या हैं?

(छ) गुवाहाटी नगर का पुराना नाम क्या है?

(ज) नामघर क्या है? उसमें क्या होता है?

(झ) गुवाहाटी के निकट स्थित हवाई-अड्डे का नाम क्या है?

(ञ) 'लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलोइ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा' का पुराना नाम क्या है?

(ट) भारत के कुछ ऐसे नगरों या स्थानों के नाम लिखिए जो परिवर्तित किए गए हैं।

(ठ) कल्पना कीजिए कि आप एक स्थान में नहीं अनेक स्थानों में घूमने जा रहे हैं। अब बताइए कि आप सर्वप्रथम किस स्थान को चुनेंगे और क्यों?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

शौक ....

योजना ....

कल्पना ....

लहलहा ....

मनोरम ....

रोमांच ....

4. सही कथन चुनिए और (✓) का निशान लगाइए :

(क) मैदानों में दूर तक धान की फसलें लहलहा रही थीं। ☐

(ख) ब्रह्मपुत्र पर शराइघाट का एक-मंजिला पुल है। ☐

(ग) मालीगाँव के पास नीलाचल पर्वत है। ☐

(घ) असम में हाथी भी खूब देखने को मिलते है।

(ङ) 'नामघर में सुबह भजन-कीर्तन होता है।

5. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

'ब्रहमपुत्र भारत का सबसे बड़ा नद है। इस वाक्य में 'बड़ा' शब्द नद की विशेषता बताता है।

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। इस तरह के कुछ विशेषण शब्द इस पाठ से छाँट कर लिखिए।

------------ ------------ ------------

------------ ------------ ------------

------------ ------------ ------------

****

X4F4K9

पाठ-छह

शगोल-काङ्जै

प्रारम्भ, जन्मदाता, प्रदर्शन, टेढ़ा, जीन, नजदीक, चोट, घुड़सवार, आवश्यक।

शगोल-काङ्जै मणिपुर का एक प्राचीनतम खेल है। इस खेल को अंगरेजी में 'पोलो' कहा जाता है। इसका प्रारम्भ मणिपुर में ही हुआ था। अब यह अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गया है। शगोल-काङ्जै का अर्थ है - घोड़े पर बैठ कर काङ्जै का खेल खेलना।

शगोल-काङ्जै का जन्मदाता 'मार्जिङ्' नामक देवता माना जाता है। लोक-विश्वास है कि यह खेल देवताओं के बीच खेला जाता था और मनुष्य ने देवताओं से इसे सीखा। 5000 ई. पूर्वा. राजा काङ्बा के समय यह खेल खेला जाता था। किन्तु इसका अत्यधिक विकास और लोकप्रियता राजा कियाम्बा (1467-1508 ई०) तथा राजा खागेम्बा (1597-1652 ई०) के समय में ही हुई। सन् 1863 ई० में कोलकाता में मणिपुर के राजा

की ओर से इस खेल का एक प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शन से अंगरेज-दर्शक इतने प्रभावित हुए कि वे इस खेल को सीखने लगे और उनकी ओर से हर जगह इसका प्रदर्शन किया जाने लगा। बाद में यह एक विश्व-प्रसिद्ध खेल बन गया।

शगोल-काङ्जै दो दलों के बीच खेला जाता है। दोनों दलों में सात-सात खिलाड़ी होते हैं। यह खेल एक खुले मैदान में खेला जाता है। मैदान की सीमा-रेखा ही इस खेल की गोल-रेखा होती है। दोनों ओर के खिलाड़ी किसी भी गोल-रेखा में गेंद को ले जा सकते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के हाथ में एक-एक काङ्जै होता है। काङ्जै बेंत का बना हुआ होता है और इसका गेंद मारने के सिरे वाला हिस्सा थोड़ा टेढ़ा होता है। गेंद, जिसे मणिपुरी भाषा में 'काङ्द्रुम' कहा जाता है, बाँस की सूखी जड़ से बनी होती है और बहुत हल्की होती है। इस खेल के लिए घोड़े की पीठ पर विशेष रूप से तैयार की हुई जीन बाँधी जाती है। खेल के दौरान एक खिलाड़ी दूसरे खिलाड़ी के नजदीक नहीं जाता, क्योंकि दूसरे खिलाड़ी के काङ्जै की मार से चोट लग सकती है। इसलिए काङ्जै पर काङ्जै मार कर या अटका कर गेंद छीनने की कोशिश की जाती है। कुशल खिलाड़ी तो काङ्जै के सहारे गेंद को हवा में उठा कर उसे नीचे गिराए बिना काङ्जै से ही मार-मार कर गोल-रेखा की ओर ले जाता हैं।

शगोल-काङ्जै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा घुड़सवार होना आवश्यक है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

प्रदर्शन	=	दिखलाने की क्रिया, दिखाना, नजारा।
जन्मदाता	=	जन्म देनेवाला, पिता।
लोकप्रियता	=	बहुत से लोगों को प्रिय लगने का भाव।
घुड़सवार	=	अश्वारोही, घोड़े पर बैठने वाला।
जीन	=	घोड़े आदि की पीठ पर रखने की गद्दी, काठी।

2. उत्तर दीजिए :

(क) शगोल-काङ्जै का क्या अर्थ है?

(ख) शगोल-काङ्जै को अंगरेजी में क्या कहा जाता है ?

(ग) शगोल-काङ्जै का जन्मदाता किसको माना जाता है ?

(घ) शगोल-काङ्जै के बारे में कैसा लोक-विश्वास प्रचलित है ?

(ङ) शगोल-काङ्जै की लोकप्रियता कब हुई ?

(च) शगोल-काङ्जै कैसे विश्व-प्रसिद्ध खेल बन गया ?

(छ) शगोल-काङ्जै में कितने खिलाड़ी होते हैं ?

(ज) शगोल-काङ्जै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को क्या होना आवश्यक है?

(झ) शगोल-काङ्जै का खेल कैसे खेला जाता है ?

(ञ) 'शगोल' और 'काङ्जै' दो अलग-अलग शब्दों से जोड़कर एक विशेष खेल का नाम होता है। जैसे ही मणिपुर में प्रचलित 'काङ्जै' लगा हुआ दो पुराने खेलों के बारे में लिखिए।

(ट) शगोल काङ्जै के अलावा मणिपुरी नृत्य भी विश्व प्रसिद्ध होता है। अब बताइए कि उस नृत्य का नाम क्या है ?

(ठ) मणिपुर के प्रमुख पारम्परिक खेलों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और उनके नाम लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जन्मदाता ------------------------------------

प्रदर्शन ------------------------------------

टेढ़ा ------------------------------------

नजदीक ------------------------------------

घुड़सवार ------------------------------------

आवश्यक ------------------------------------

4. खाली जगह भरिए :

(क) शगोल-काङ्जै का जन्मदाता ------------ माना जाता है।

(ख) शगोल-काङ्जै दो ------------ खेला जाता है।

(ग) काङ्जै ------------ हुआ होता है।

(घ) प्रत्येक खिलाड़ी के ------------ होता है।

(ङ) काङ्द्रुम बाँस की ------------ बनी होती है।

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) शगोल-काङ्जै मणिपुर का एक प्राचीनतम खेल है। ☐

(ख) अब शगोल-काङ्जै अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गया है। ☐

(ग) शगोल-काङ्जै देवताओं और मनुष्यों के बीच खेला जाता था। ☐

(घ) शगोल-काङ्जै के दोनों दलों में सात-सात खिलाड़ी होते हैं। ☐

(ङ) काङ्द्रुम बहुत भारी होती है। ☐

6. पिछले पाठ में विशेषण की पहचान बताया जा चुका है। अब इसके मुख्य चार प्रकारों को अच्छी तरह समझिए -

(क) गुण वाचक विशेषण

(ख) परिमाण वाचक विशेषण

(ग) संख्या वाचक विशेषण

(घ) सार्वनामिक विशेषण

'शगोल-काङ्जै के लिए प्रत्येक खिलाड़ी को एक अच्छा घुड़सवार होना

आवश्यक है।'

यहाँ 'अच्छा' गुण वाचक विशेषण है।

'काङ्जै का गैंद मारने के सिरेवाला हिस्सा थोड़ा टेढ़ा होता है।'

यहाँ 'थोड़ा' परिमाण वाचक विशेषण है।

''दोनों दलों में सात-सात खिलाड़ी होते हैं।'

यहाँ 'दोनों' और 'सात-सात' संख्यावाचक विशेषण हैं ।

'यह खेल एक खुले मैदान में खेला जाता हैं ।'

यहाँ 'यह' सार्वनामिक विशेषण है।

7. नीचे लिखे विशेषणों के दो-दो उदाहरण लिखिए :

गुण वाचक विशेषण-

------------------- -----------------

परिमाण वाचक विशेषण

------------------- -----------------

संख्या वाचक विशेषण

------------------- -----------------

सार्वनामिक विशेषण

------------------- -----------------

****

पाठ-सात

कमल को देख

पुष्प, पर्याप्त, तलहटी, परछाई, तराई, छाना।

खिलो पुष्प
खिलो आज
पर्याप्त है जल
        खिलो पुष्प।
पर्वत तक सूर्य के पहुँचने के पूर्व
पहुँचने के पूर्व पर्वत की
तलहटी में परछाई
छाने के पहले लालिमा तराई में
        खिलो पुष्प।

(कवि चाओबा की कविता का अनुवादांश)

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

तलहटी = पहाड़ के नीचे की भूमि ।

परछाई = प्रतिच्छाया; जल, दर्पण आदि में पड़ने वाले किसी की छायाकृति ।

तराई = पहाड़ के आस -पास की निम्न भूमि जहाँ सदा तरी बनी रहती है ।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कमल को देख कविता का रचयिता कौन है ?

(ख) कवि कमल से कब-कब खिलने के लिए कहता ?

(ग) इस कविता का मूल भाव लिखिए ।

(घ) ''कमल'' के दो पर्याय शब्द लिखिए ।

(ङ) कमल कितने रगों में मिलता है ?

(च) तुमने कितने प्रकार के कमल देखे हैं ? उन कमलों के बारे में पाँच वाक्य लिखिए ।

(छ) कमल जैसे पानी में उगने वाले कुछ फूलों के नाम लिखिए ।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

पुष्प ....

पर्याप्त ....

पूर्व ....

तलहटी ....

परछाई ....

लालिमा ....

तराई ....

4. नीचे लिखे विपरीत अर्थवाले शब्दों को पहचानिए और समझिए :

मित्र — शत्रु	बहुत — थोड़ा
सूखा — गीला	पूर्व — पश्चिम
बड़ा — छोटा	जल — थल
दिन — रात	मृत्यु — जीवन

5. समान अर्थवाले शब्दों को पहचानिए और समझिए :

पुष्प - सुमन, फूल, कुसुम, प्रसून, पुहुप आदि ।

जल - नीर, सलिल, पानी, तोय, वारि, अम्बु आदि।

पर्वत - पहाड़, शैल, अचल, गिरि, नग आदि।

सूर्य - भास्कर, भानु, रवि, दिनेश, दिनमणि आदि।

चन्द्र - निशाकर, चाँद, इन्दु, सोम, शशि, विधु आदि।

नदी - सरिता, प्रवाहिनी, तटिनी, तरंगिणी, स्रोतस्विनी आदि।

पवन - हवा, समीर, वायु, अनिल, वात, मारुत, आदि।

6. (ग) निम्नांकित शब्दों के दो-दो समानार्थक शब्द लिखिए :

पुष्प ....

पर्वत ....

सूर्य ....

चन्द्र..

नदी ....

पवन ....

जल ....

****

B2I4W2

पाठ-आठ

चुनाव का पर्व

अवकाश, गृह-कार्य, आम-चुनाव, प्रणाली, लोकतान्त्रिक, प्रतिनिधि, आयोग, मतदान, सूची, दर्ज, उम्मीदवार, चहल-पहल, नुकसान, वयस्क, समाना, निभाना।

मेमचा - माँ, कल हमारे विद्यालय में अवकाश है। जल्दी से खाना दो, फिर मुझे खेलने जाना है। गृह-कार्य कल आराम से करूँगी।

लीलावती - क्यों ! अवकाश क्यों है ! कल तो कोई पर्व -त्योहार भी नहीं है।

मेमचा - गुरुजी ने बताया है, कल आम-चुनाव है।

लीलावती - अरे हाँ, मैं तो भूल ही गई थी, कल चुनाव है। यह किसी पर्व से कम नहीं है।

मेमचा - यह कैसे पर्व हो सकता है?

लीलावती - देखो बेटी, पर्व शब्द का अर्थ होता है - 'धर्म, पुण्य-कार्य अथवा उत्सव आदि सम्पन्न करने का समय'।

मेमचा - यह तो मेरी पुस्तक में लिखा है, लेकिन चुनाव को तुम पर्व कह रही हो, यह मेरी समझ में नहीं आया।

लीलावती - समझाती हूँ। पहले बताओ, हमारे देश में कौन-सी शासन-प्रणाली है?

मेमचा - लोकतान्त्रिक शासन-प्रणाली।

लीलावती - इस प्रणाली का क्या अर्थ है?

मेमचा - जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन।

लीलावती - जनता कैसे शासन करती है?

मेमचा - यह तो मैं नहीं जानती।

लीलावती - मैं बताती हूँ। जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है, जो उसकी ओर से शासन चलाते हैं। प्रतिनिधि चुनने के लिए ही आम-चुनाव होता है।

मेमचा - आम-चुनाव कैसा होता है।

लीलावती - हर पाँच साल पर चुनाव-आयोग आम-चुनाव कराता है। जगह-जगह मतदान-केन्द्र बनाए जाते हैं। मतदाताओं की एक सूची होती है। उसमें 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के स्त्री-पुरुषों के नाम दर्ज होते हैं।

मेमचा - फिर क्या होता है ?

लीलावती - चुनाव-आयोग ही मतदान की तिथियाँ घोषित करता है। उन्हीं के अनुसार मतदाता मतदान केन्द्रों पर जाकर अपनी पसन्द के उम्मीदवार के पक्ष में मत डालते हैं। इस प्रकार जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है।

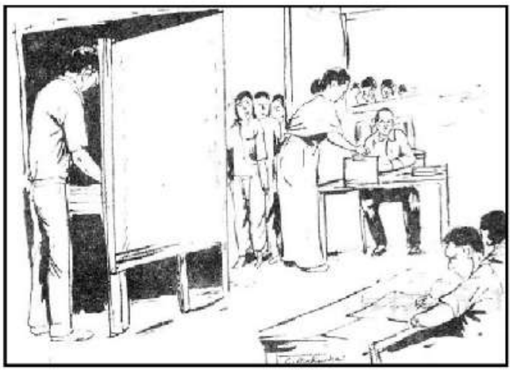

मेमचा - मगर यह पर्व कैसे हुआ?

लीलावती - अभी भी तुम्हारी बुद्धि में नहीं आया ! अच्छा, दूसरे ढंग से समझाती हूँ। बताओ, अच्छे, योग्य और ईमानदार प्रतिनिधि चुनना जनता का धर्म है या नहीं?

मेमचा - बिलकुल है।

लीलावती - जो धर्म पर आधारित हो, वह पुण्य-कार्य होगा ही।

मेमचा - हाँ, होगा।

लीलावती - और चुनाव के समय खूब चहल-पहल भी रहती है।

मेमचा - हाँ, रहती है।

लीलावती - इसका अर्थ है कि चुनाव में पर्व की तीनों विशेषताएँ समाई हुई हैं। इसीलिए मैंने इसे पर्व कहा था।

मेमचा - मैं अच्छी तरह समझ गई माँ। बड़ी होकर मैं मतदान में अवश्य भाग लूँगी।

लीलावती - जरूर भाग लेना। मतदान करना और अच्छे प्रतिनिधि चुनना हमारा धर्म है। जो इस धर्म को नहीं निभाता, वह समाज और देश का नुकसान करता है।

मेमचा - माँ, एक बात और बताओ। क्या कोई हमें मतदान करने से रोक भी सकता है ?

लीलावती - नहीं, मतदान करना प्रत्येक वयस्क व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार है। इस अधिकार को छीनने वाला दण्ड का भागी होता है।

मेमचा - माँ, तुमने आज ज्ञान की बहुत बातें बताईं।

लीलावती - अच्छा-अच्छा, अब बस करो। कल मुझे भी मतदान करने जाना है। तुम चाहो तो मेरे साथ चल कर सब कुछ अपनी आँखों से देखना।

मेमचा - ठीक है माँ।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अवकाश	=	शुन्य स्थान, छुटटी।
आम-चुनाव	=	साधारण चुनाव।
शासन-प्रणाली	=	शासन की पद्धति।
प्रतिनिधि	=	वह व्यक्ति जो किसी के स्थान पर उसका कार्य करे।
चुनाव-आयोग	=	इलेक्शन-कमीशन।
दर्ज	=	अंकित, उल्लिखित, लिखा हुआ।
मतदान	=	चुनाव आदि में विधिवत् मत देना।
उम्मीदवार	=	नौकरी या पद विशेष का प्रार्थी, चुनाव के लिए खड़ा होने वाला।
चहल-पहल	=	किसी स्थान पर अधिक आदमियों के इकट्ठे होने और आने-जाने से पैदा हुई सजीवता, धूम-धाम।
वयस्क	=	सयाना, बालिग।

2. उत्तर दीजिए :

(क) हमारे देश में कौन-सी शासन-प्रणाली है?

(ख) लोकतान्त्रिक शासन-प्रणाली का क्या अर्थ है ?

(ग) आम-चुनाव क्यों होता है?

(घ) कितने साल पर आम-चुनाव होता है?

(ङ) मतदाताओं की सूची में कैसे लोगों के नाम दर्ज होते हैं?

(च) जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव कैसे करती है?

(छ) किससे देश और समाज का नुकसान होता है?

(ज) प्रत्येक वयस्क व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार क्या है?

(झ) अपने इलाके में हुई चुनाव के दृश्य का वर्णन पाँच वाक्यों में लिखिए।

(ञ) आप को किस उम्र में मताधिकार मिलेगा?

(ट) भारतीय संविधान के अनुसार किन-किन लोगों को वयस्क व्यक्ति कहेंगे? अपने अध्यापक से पूछ कर लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अवकाश --

आम-चुनाव ------------------------------------

प्रतिनिधि---------------------------------------

मतदान ---

उम्मीदवार -------------------------------------

ईमानदार ---------------------------------------

चहल-पहल -------------------------------------

वयस्क --

संवैधानिक -------------------------------------

अधिकार --

4. सही कथन चुनिए और लिखिए :

(क) आम-चुनाव के द्वारा जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है।

(ख) हर पाँच साल पर चुनाव-आयोग आम-चुनाव कराता है।

(ग) मतदाताओं की सूची में बच्चे-बूढ़े सभी के नाम दर्ज होते हैं।

(घ) आम-चुनाव के समय खूब चहल-पहल रहती है।

(ङ) मतदान करना प्रत्येक व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार है।

....

....

....

....

....

5. खाली जगह भरिए :

(क) प्रतिनिधि चुनने के लिए------------------------------ है।

(ख) जगह-जगह ---------------------------- बनाए जाते हैं।

(ग) इस प्रकार जनता -------------------------------करती है।

(घ) इस अधिकार को ---------------------------- होता है।

(ङ) कल मुझे भी ------------------------------------ है।

6. 'जो....वह' के प्रयोग को ध्यान से पढ़िए, समझिए और नीचे दिए गए खाली जगहों को पूरा कीजिए :

जो धर्मपर आधारित हो, वह पुण्य - कार्य होगा ही।

जो इस धर्म को नहीं निभाता, वह समाज और देश का नुकसान करता है।

जो भी मैं पढ़ता हूँ, वह याद रखता हूँ।

जो लड़का कल यहाँ आया था, वह तोम्बा का भाई है।

जो पसन्द हो, वही चुन लो।

जो देता है, ------------------------------------- ।

जो कहा, --------------------------------------- ।

जो कमाता है, ----------------------------------- ।

जो सोचता हूँ --------------------------------------- ।

जो चाहिए, ------------------------------------- ।

7. 'हर पाँच साल पर चुनाव-आयोग आम-चुनाव कराता है। जगह-जगह मतदान-केन्द्र बनाए जाते हैं। मतदाताओं की एक सूची होती है।'

उपर्युक्त वाक्यों में विभिन्न क्रियाएँ आती हैं –'कराता', 'बनाए जाते हैं,' 'होती है,' आदि । इसके मूल रूप अर्थात सामान्य क्रिया 'करना', 'बनाना', 'जाना' और 'होना' हैं।

किसी एक क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप से पाया जाता है, उसे धातु कहते हैं। जैसे - कर, जा, डाल, आदि। जब कोई एक धातु प्रयोग में आती है तो उसके कई रूप पाए जाते हैं जैसे - करना, करता, करो, किया, करती, कराता, कराती, आदि। इन सब का समान रूप है 'कर'।

नीचे लिखी धातुओं के सामान्य क्रिया रूप और उनके प्रयोग में आए चार-चार रूप लिखिए ;

धातु	सामान्य क्रिया	प्रयोग में आए रूप			
खा					
बोल					
चल					
पी					
रो					
देख					

****

B4L7A8

पाठ-नौ

इनाम

चेहरा, निर्दोष, साबित, सांत्वना, रौनक, ठिकाना, भाँपना।

चिङ्लेम्बा के पास एक नई कलम देख कर उसकी माँ ने पूछा – ''तुम यह कलम कहाँ से लाए हो?''

''अपने मित्र याइफबा से।'' चिङ्लेम्बा ने उत्तर दिया। माँ ने फिर पूछा – ''तुम इसे क्यों लाए हो ?''

''इसका रंग-रूप मुझे बहुत अच्छा लगा।'' चिङ्लेम्बा ने फिर उत्तर दिया। लेकिन माँ चुप नहीं रही । उसने सवाल किया –''क्या तुम इसे याइफबा से पूछ कर लाए हो ?''

चिङ्लेम्बा ने धीरे से कहा – ''नहीं, मैंने उससे नहीं पूछा।'' माँ ने आश्चर्य के साथ कहा – ''अरे ! क्यों ?'' चिङ्लेम्बा ने धीरे से जबाव दिया – ''अगर पूछता तो वह नहीं मानता।'' माँ ने क्रोधित होकर कहा – ''अरे! तो तुम इसे चोरी करके लाए हो ?''

चिङ्लेम्बा का चेहरा लाल हो गया। उसने तुरन्त उत्तर दिया – ''नहीं, मैंने कोई चोरी नहीं की।'' तब माँ ने और क्रोधित होकर कहा – ''यदि तुम उसकी कलम उससे पूछ कर नहीं लाए हो तो इस काम को चोरी ही मानना पड़ेगा।''

माँ की बात सुन कर चिङ्लेम्बा चुप रह गया। माँ उसको बड़े ध्यान से देखने लगी। चिङ्लेम्बा को अपनी माँ के मुँह से चोरी शब्द सुनकर बहुत बुरा लगा। लेकिन वह क्या करता! उसने चोरी की थी। उसके पास अपने को निर्दोष साबित करने का कोई उपाय नहीं था। अपने बेटे की स्थिति भाँप कर माँ ने चिङ्लेम्बा से कहा – ''सुनो बेटा! चोरी करना बहुत बुरा है। तुम किसी की चीज बिना बताए ले आए हो, सोचो, उसे कितना दुख होगा।

यदि कल कोई दूसरा तुम्हारी चीज तुम से बताए बिना उठाकर ले जाएगा तो तुम्हें भी दुख होगा कि नहीं ?''

माँ की बात सुन कर चिङ्लेम्बा को अपने टाइगर नामक पिल्ले का ध्यान आया। मुहल्ले का प्रत्येक व्यक्ति इस पिल्ले को पालना चाहता है। चिङ्लेम्बा इसे अपने प्राण से भी ज्यादा चाहता है। इसलिए किसी भी हालत में वह इस पिल्ले को खोना नहीं चाहता। चिङ्लेम्बा ने घबराते हुए अपनी माँ से पूछा – ''माँ, मेरे टाइगर को भी कोई चोरी करके ले जाएगा ?'' माँ ने धीरे से कहा – ''हाँ बेटा, किसी दिन ऐसा अवश्य हो सकता है।''

माँ की बात सुनकर चिङ्लेम्बा रोने लगा। उसने अपनी माँ से कहा – ''माँ, मैं टाइगर को खोना नहीं चाहता।''

माँ ने चिङ्लेम्बा को ध्यान से देखा और उसे सांत्वना देते हुए कहा – ''बेटा, इससे बचने का एक ही उपाय है।''

चिङ्लेम्बा के चेहरे पर रौनक लौट आई। उसने पूछा – ''माँ, वह कौन सा उपाय है?''

माँ ने मुस्करा कर जवाब दिया – ''तुम याइफबा को उसकी कलम लौटा दो। यदि ऐसा करोगे तो अपने टाइगर को भी बचा सकोगे।''

चिङ्लेम्बा ने तुरन्त कहा – ''हाँ माँ ! मैं अभी याइफबा के पास उसकी कलम लौटाने के लिए जा रहा हूँ। मैं उससे अपनी गलती की माफी भी माँगूँगा।''

अपने बेटे को देखकर माँ मुस्कराते हुए बोली – ''बेटा ! यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें इसी तरह की दूसरी कलम खरीद कर दूँगी।''

चिङ्लेम्बा ने आश्चर्य में भर कर पूछा – ''जरूर दोगी माँ ?''

माँ ने उत्तर दिया – ''हाँ, जरूर। वह तुम्हारे सदाचार का इनाम होगा।''

अपनी माँ की बात सुनकर चिङ्लेम्बा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह कलम लेकर याइफबा के पास दौड़ गया।

माँ उसे देखकर चिल्लाती रही – "अरे बेटा, धीरे-धीरे जाओ। भागो मत। गिर पड़ोगे।"

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

साबित = प्रमाणित।

भाँपना = रंग ढंग से जान लेना।

सांत्वना = ढाढ़स बाँधना, तसल्ली।

रौनक = चमक, ताजगी।

सदाचार = अच्छा चाल-चलन, अच्छा व्यवहार।

2. उत्तर दीजिए :

(क) चिङ्लेम्बा किसकी कलम ले आया?

(ख) चिङ्लेम्बा का चेहरा क्यों लाल हो गया?

(ग) उसकी माँ ने क्रोधित होकर क्या कहा?

(घ) चिङ्लेम्बा के पिल्ले का क्या नाम है?

(ङ) चिङ्लेम्बा अपने पिल्ले को क्यों खोना नहीं चाहता?

(च) चिङ्लेम्बा क्यों रोने लगा?

(छ) चिङ्लेम्बा के चेहरे पर रौनक कैसे लौट आई?

(ज) माँ ने चिङ्लेम्बा से क्या देने का वादा किया?

(झ) चिङ्लेम्बा ने अपनी माँ का वादा सुनकर क्या किया?

(ञ) भारत सरकार द्वारा नीचे लिखे क्षेत्रों में सम्मानित दो-दो व्यक्तियों के नाम लिखिए –

कला ....
खेल ....
साहित्य ....
विज्ञान ....

(ट) भारत सरकार की तरफ से दिए हुए पाँच सम्मानित पुरस्कारों के नाम लिखिए।

(ठ) चिङ्लेम्बा को माँ का दिया हुआ सदाचार का इनाम मिलता है। वैसे ही आप भी इनाम का एक भागीदार बनना चाहते हैं या नहीं ? अगर इनाम की इच्छा हो तो आप क्या-क्या करेंगे? छह वाक्यों में अपना विचार लिखिए।

3. वाक्य में प्रयोग कीजिए :

निर्दोष ....
आश्चर्य ....
साबित ....
सांत्वना ....
रौनक ....
सदाचार ....
ठिकाना ....

4. तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और वाक्य बनाइए :

चिङ्लेम्बा	का/के/की	चेहरा लाल हो गया। अपने पिल्ले को अपने प्राणों से ज्यादा चाहता है। अपने पिल्ले को खोना नहीं चाहता। चेहरे पर रौनक लौट आई। खुशी का ठिकाना न रहा। कलम लेकर याइफबा के पास दौड़ गया।

....

....

....

....

....

....

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) चिङ्लेम्बा याइफबा से पूछ कर उसकी कलम ले आया। ☐

(ख) माँ की बात सुनकर चिङ्लेम्बा चुप रह गया। ☐

(ग) मुहल्ले का प्रत्येक व्यक्ति टाइगर को पालना चाहता है। ☐

(घ) माँ ने चिङ्लेम्बा से कलम न लौटाने की बात कही। ☐

(ङ) माँ चिङ्लेम्बा को एक कलम खरीद कर देगी। ☐

6. नीचे लिखे मुहावरे का अर्थ और इसके प्रयोग को ध्यान से पढ़िए और समझिए :

चेहरा लाल होना – क्रोध या लज्जा से मुँह का लाल होना।

गलत आरोप पर उसका चेहरा लाल हो गया।

7. "यदि .... तो" का प्रयोग ध्यान से पढ़िए, समझिए और नीचे दिए गए खाली जगहों को पूरा कीजिए :

यदि ऐसा करोगे तो अपने टाइगर बचा सकोगे।

यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें एक कलम दूँगी।

यदि तुम वहाँ जाओ तो उससे जरूर मिलो।

यदि वह आएगा तो मैं नहीं जाऊँगा।

यदि यह काम जल्दी पूरा नहीं होगा तो हमें पैसा नहीं मिलेगा।

यदि तुम नहीं पढ़ोगे तो .... ।

यदि युद्ध हुआ तो..।

यदि शीला वापस नहीं आएगी तो .... ।

यदि उन्होंने ऐसा किया तो .... ।

यदि यह दवा खाई तो .... ।

8. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

मुहल्ले का प्रत्येक व्यक्ति इस पिल्ले को पालना चाहता है।

माँ की बात सुन कर चिङ्लेम्बा रोने लगा।

दोनों वाक्यों की क्रिया अलग-अलग प्रकार की है। किसी भी भाषा में कोई भी वाक्य क्रिया के बिना पूर्ण नहीं होता। पहले वाक्य की क्रिया सकर्मक है और दूसरे वाक्य की अकर्मक । सकर्मक क्रिया की पहचान यह है कि उस क्रिया के साथ ''क्या'' का प्रश्न कीजिए, जैसे ऊपर के उदाहरण में ''मुहल्ले का प्रत्येक व्यक्ति क्या पालना चाहता है? उत्तर है ''पिल्ला''। इसलिए यह सकमर्क क्रिया है। कुछ सकर्मक क्रियाएँ हैं - करना, तौलना, देखना, पढ़ना, पीना, खाना, लिखना, खींचना, चाहना, लेना, देना, सुनना, पाना आदि ।

दूसरे वाक्य में क्रिया के साथ प्रश्न करने पर कोई उत्तर नहीं आता। इसलिए ''रोने लगा'' अकर्मक क्रिया है। कुछ अकर्मक क्रियाएँ हैं - उठना, होना, बैठना, जागना, सोना, जाना, मानना, डरना, चमकना, लड़ना, भागना, ठहरना, रोना, आदि।

****

U2E6V6

पाठ-दस

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ

महान, अतिरिक्त, रूढ़ि, होशियार, सम्पादन, निधन, उपाधि, अलंकृत, व्यवसाय, भतीजी।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ असमीया भाषा के महान लेखक थे। उन्हें असमीया का राष्ट्रीय कवि भी कहा जाता है। उन्होंने कविता के अतिरिक्त नाटक, निबन्ध, कहानी आदि के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण साहित्य की रचना की। वे अपनी रचनाओं से रूढ़ियों को तोड़ कर उन्नतिशील समाज बनाना चाहते थे।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ का जन्म सन् 1868 ई० में हुआ था। उनके पिता का नाम दीनानाथ बेजबरुआ था। उनका जन्म लक्ष्मी पूर्णिमा के दिन हुआ था, इसीलिए उनका नाम लक्ष्मीनाथ रखा था।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ बचपन से ही प्रकृति-प्रेमी थे। वे जंगल में जाकर चिड़ियों का गाना सुनते रहते थे। उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। वे बार-बार कहने पर ही स्कूल जाते थे। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे पढ़ने में होशियार नहीं थे। वे परिश्रमी और होशियार थे। वे अपना पाठ तुरन्त याद कर लेते थे। वे अध्यापक द्वारा दिया कार्य समय पर करके दिखा देते थे।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने शिवसागर हाईस्कूल से एन्ट्रेन्स परीक्षा पास की। फिर उन्होंने कोलकता जाकर एसेम्बली कॉलेज में प्रवेश लिया। वहाँ से उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने सरकारी नौकरी नहीं की। वे अंगरेजी की नौकरी नहीं चाहते थे। उन्होंने कोलकता में ही लकड़ी का व्यवसाय प्रारंभ किया। कुछ दिनों बाद उनका विवाह प्रज्ञासुन्दरी देवी से हो गया। उनकी पत्नी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भतीजी और सत्येन्द्रनाथ ठाकुर की पुत्री थीं। विवाह के बाद वे उड़ीसा चले गए। वहाँ उन्होंने सम्बलपुर में लकड़ी का व्यापार किया। वे व्यवसाय के साथ-साथ साहित्य-साधना करते रहे।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ उच्च कोटि के सम्पादक भी थे। उन्होंने ''जोनाकी'' नामक पत्रिका का सम्पादन किया। उन्होंने स्वयं भी एक पत्रिका का प्रकाशन किया। उसका नाम था ''बाँही''। इन पत्रिकाओं ने असमीया साहित्य को नई दिशा प्रदान की।

सन् 1938 में लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ की मृत्यु हो गई। उस समय वे डिब्रूगढ़ में थे। उनके निधन से असमवासी शोक में डूब गए।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ को ''साहित्य रथी'' की उपाधि से अंलकृत किया गया था।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अतिरिक्त = सिवाय, अलावा।
रूढ़ि = पुरानी पड़ गई अनुपयोगी प्रथा।
होशियार = बुद्धिमान, सावधान।
व्यवसाय = व्यापार, कारबार।
भतीजी = भाई की बेटी।
शोक = प्रिय वस्तु या व्यक्ति के वियोग से उठने वाली व्यथा।

उपाधि	=	पदवी, योग्यता या प्रतिष्ठा सूचित करने वाला शब्द।
निधन	=	मरण।
अलंकृत	=	अलंकारयुक्त, भूषित।

2. उत्तर दीजिए :

(क) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ कौन थे?

(ख) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने किन-किन विधाओं में रचनाएँ कीं?

(ग) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ अपनी रचनाओं के माध्यम से क्या करना चाहते थे?

(घ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ का नाम क्यों लक्ष्मीनाथ रखा गया?

(ङ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने कहाँ-कहाँ शिक्षा प्राप्त की?

(च) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने सरकारी नौकरी क्यों नहीं की?

(छ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ की पत्नी कौन थी?

(ज) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने किन-किन पत्रिकाओं का सम्पादन किया?

(झ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ की मृत्यु कब और कहाँ हुई?

(ञ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ को किस उपाधि से अलंकृत किया गया?

(ट) असम के महान संगीतज्ञ प्रसिद्ध कलाकार डॉ. हजारिका का पूरा नाम क्या है?

(ठ) ब्रिटीश इंडिया के शासन काल में असम राज्य की सीमा रेखा अध्यापक से पूछ कर स्पष्ट रूप से लिखिए।

(ड) भारत का एक नक्शा तैयार कर वर्तमान असम राज्य की सीमा रेखा दिखाइए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अतिरिक्त ....

रूढ़ि ....

उन्नतिशील ....

होशियार ....

परिश्रमी ....

व्यवसाय ....

सम्पादन ....

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाए :

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ	असमीया भाषा के महान लेखक बचपन से ही प्रकृति-प्रेमी परिश्रमी और होशियार उच्च कोटि के सम्पादक व्यवसाय के साथ-साथ साहित्य-साधना भी करते	थे।

....

....

....

....

....

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान लगाइए :

(क) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ को असमीया का राष्ट्रीय कवि कहा जाता है। ☐

(ख) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ केवल कविता ही लिखते थे। ☐

(ग) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ पढ़ने में होशियार नहीं थे। ☐

(घ) लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने सरकारी नौकरी नहीं की। ☐

(ङ) विवाह के बाद लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ उड़ीसा चले गए। ☐

6. संसार की हर भाषा में संज्ञा शब्दों का लिंग निर्णय करके प्रयोग किया जाता है। हिन्दी भाषा में प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय करना कठिन नहीं है, परन्तु अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग-निर्णय में कठिनाई होती है।

इसलिए लिंग-निर्णय के कुछ साधारण नियम नीचे दिया जा रहे हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. अकारान्त तत्सम संज्ञाएँ	१. इकारान्त संज्ञाएँ
२. आकारान्त संज्ञाएँ	२. आकारान्त तत्सम संज्ञाएँ
३. वृक्षों के नाम	३. इकारान्त तत्सम संज्ञाएँ
४. ग्रहों के नाम	४. अकारान्त तत्सम संज्ञाएँ
५. पहाड़ों के नाम	५. नदियों के नाम
६. महीनों और दिनों के नाम	६. तिथियों के नाम
७. आ, आटा, आपा, आव, आवा औटा, औड़ा, क, त्व, ना, पन, या, आदि प्रत्यय लगे हुए शब्द ।	७. भाषाओं के नाम
	८. आई, आवट, आस, आहट, इया, ई, त, ता, नी, री, ली, आदि प्रत्यय लगे हुए शब्द।

●उपर्युक्त निर्धारित नियमों के कई अपवाद शब्द होते हैं, उन शब्दों की जानकारी के लिए अध्यापक की सहायता लीजिए और ज्ञान अर्जित कीजिए।

प्रस्तुत पाठ 'लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ' से पाँच पुल्लिंग शब्द और पाँच स्त्रीलिंग शब्द चुनकर लिखिए :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

****

E4J2L5

पाठ-ग्यारह

स्वतन्त्रता-दिवस

विराजमान, चक्राकार, ध्वज, इकट्ठा, अधिकार, गुलाम, अत्याचार, तंग, बीड़ा, हथियार, बधाई, उन्नति, जमा।

आज लाल किले के सामने बहुत लोग जमा हैं। कुर्सियों पर देश-विदेश के महत्वपूर्ण व्यक्ति विराजमान हैं। नीचे पंक्तियों में स्कूली बच्चे बैठे हैं। कुछ ने केसरिया, कुछ ने सफेद, कुछ ने हरे वस्त्र पहन रखे हैं। ये सीधी पंक्तियों में बैठे हैं। कुछ बच्चों ने नीले वस्त्र पहन रखे हैं। वे चक्राकार रूप में बैठे हैं। इन बच्चों ने राष्ट्रीय ध्वज का दृश्य उपस्थित कर दिया है।

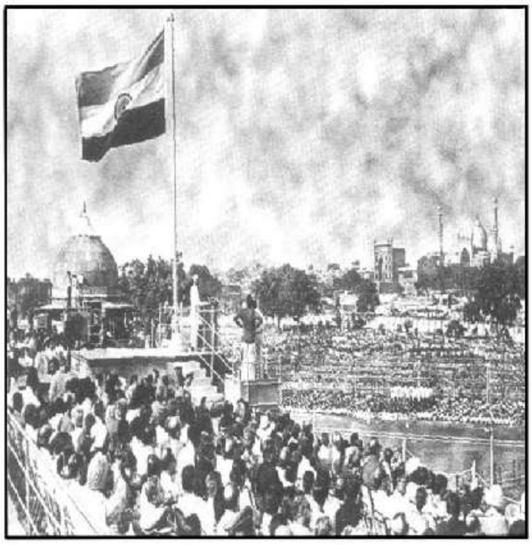

ये सब लोग यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं?

आज 15 अगस्त का दिन है। इस दिन को स्वतन्त्रता-दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह हमारा राष्ट्रीय-दिवस है। हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ था। इसके पहले हमारे देश पर अंगरेजों का अधिकार था। उन्होंने हमारे देश को अपना गुलाम बना रखा था। वे हम पर तरह-तरह से अत्याचार करते थे।

जनता गुलामी से तंग आ गई। भारत के सपूतों ने अंगरेजों को अपने देश से भगाने का बीड़ा उठाया। सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल

आदि ने विदेशी शासन के विरुद्ध हथियार उठा लिए। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, अब्दुल गफ्फर खाँ, जवाहरलाल नेहरू आदि ने भारतीय राष्ट्रीय कांगरेस के माध्यम से आन्दोलन चलाया। आखिर वीरों का बलिदान रंग लाया। भारत स्वतन्त्र हो गया।

लो, प्रधान मन्त्री जी ने राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया। अब वे लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधित कर रहे हैं। उन्होंने सर्वप्रथम देशवासियों को स्वतन्त्रता-दिवस की बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि हम सब को अपने देश की उन्नति लिए कार्य करना है। हमारे जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रमशीलता और राष्ट्र-भक्ति होनी चाहिए। तभी हम स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकते हैं।

लोग बीच-बीच में तालियाँ बजा कर खुशी प्रकट कर रहे हैं। करोड़ों लोग दूरदर्शन पर यह दृश्य देख रहे हैं।

हम सब अपने देश की स्वतन्त्रता को प्राणों से भी अधिक चाहते हैं।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

विराजमान	=	विद्यमान, बैठा हुआ।
केसरिया	=	केसर के रंग का।
ध्वज	=	झण्डा, पताका।
इकट्ठा	=	एकत्र, एक साथ।
विरुद्ध	=	प्रतिकूल।
हथियार	=	अस्त्र-शस्त्र
बधाई	=	किसी की सफलता पर किया जाने वाला हर्ष-प्रकाश, मुबारकबाद।

2. उत्तर दीजिए :

(क) बच्चों ने राष्ट्रीय ध्वज का दृश्य कैसे उपस्थित किया?

(ख) 15 अगस्त को क्यों स्वतंत्रत दिवस के रूप में मनाया जाता है?

(ग) भारत के सपूतों ने किसका बीड़ा उठाया?

(घ) किन लोगों ने विदेशी शासन के विरुद्ध हथियार उठा लिए?

(ङ) किन लोगों ने किसके माध्यम से आन्दोलन चलाया?

(च) स्वतंत्रता दिवस के दिन भारत के प्रधान मंत्री ने लाल किले से राष्ट्र को सम्बोधित कर क्या कहा था?

(छ) लोग तालियाँ बजाकर क्या करते हैं?

(ज) हम किसको अपने प्राणों से भी अधिक चाहते हैं?

(झ) स्वतंत्रता के आन्दोलन में भाग लेनेवाले किन्हीं पांच देश भक्तों पर तीन-तीन वाक्य लिखिए।

(ञ) हमारे देश भारत के 'राष्ट्र गान' का रचयिता कौन है? उस राष्ट्रगान को लिखिए।

(ट) पुराने जमाने से विश्व के किसी-न-किसी स्थान में स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते रहते थे। ऐसी लड़ाई भारत में भी अंगरेजों के खिलाफ छेड़ी। भारत की स्वतंत्रता से संबंधित पुस्तकों को पढ़कर आप यह जानने की कोशिश कीजिए – 'भारत के सर्वप्रथम स्वतंत्रता संग्राम कब और कहाँ से शुरू हुआ था?

(ठ) आपने टेलीविजन में भारतवासियों द्वारा मनाए गए 'स्वतंत्रता दिवस' और 'गणतंत्र दिवस' समारोहों की झलकें देखे होंगे। अब लिखिए कि उन दोनों में क्या अन्तर देख पाते हैं।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विराजमान ....

चक्राकार ....

अत्याचार ....

हथियार ....

माध्यम ....

बधाई ....

उन्नति ....

ईमानदारी ....

परिश्रमशीलता ....

4. खाली जगह भरिए :

(क) कुर्सियों पर .... विराजमान हैं।

(ख) सब बच्चों ने .... उपस्थित कर दिया है।

(ग) इसके पहले .... अधिकार था।

(घ) उन्होंने सर्वप्रथम .... बधाई दी।

(ङ) करोड़ों लोग .... देख रहे हैं।

5. तालिका को ध्यान से पढ़िए तथा खण्ड 'क' और 'ख' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
लाल किले के सामने	उन्नति के लिए कार्य करना है।
वे चक्राकार	यह दृश्य देख रहे हैं।
हमारे देश पर	बहुत लोग जमा हैं।
हम सब को अपने देश की	अंगरेजों का अधिकार था।
करोड़ों लोग दूरदर्शन पर	रूप में बैठे हैं।

....

....

....

....

....

6. अर्थ लिखिए :

ध्वज = ...

इकट्ठा = ...

विरुद्ध = ...

हथियार = ...

वस्त्र = ...

दिवस = ...

स्वतन्त्र = ...

7. नीचे दो मुहावरों के अर्थ और प्रयोग के उदाहरण दे रहे हैं, उसे ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) बीड़ा उठाना = किसी काम का भार लेना

भारत को सपूतों ने अंगरेजों को भारत से भगाने का बीड़ा उठाया।

मोहन ने खोए हुए लड़के को खेजने का बीड़ा उठाया।

(ख) रंग लाना = असर दिखाना

स्वाधीनता संग्राम में भारतीय वीरों का बलिदान रंग लाया।

तोम्बा का अथक परिश्रम अब रंग लाया है।

8. विभिन्न कारकों के विभक्ति चिह्नों के प्रयोग से संज्ञा शब्दों के रूपों में जो परिवर्तन होते हैं, उसे संज्ञा रूपावली कहते हैं। जैसे : बालकों ने, लड़के को, लड़कों को पिता से, पिताओं से, कवि के लिए, कवियों के लिए, साथी का, साथियों का, गुरुओं में, हे, डाकू, हे डाकुओ, आदि।

नीचे लिखी संज्ञा रूपावली के नमूने को ध्यान से पढ़िए और समझिए :

कारक	–	एकवचन	बहुबचन
कर्ता	–	बच्चा, बच्चेने	बच्चे, बच्चों ने
कर्म	–	बच्चा, बच्चे को	बच्चे, बच्चों को
करण	–	बच्चे से, के द्वारा	बच्चों से, के द्वारा
सम्प्रदान	–	बच्चे को, के लिए	बच्चों को, के लिए
अपादान	–	बच्चे से	बच्चों से
सम्बन्ध	–	बच्चे का, के, की	बच्चों का, के ,की
अधिकरण	–	बच्चे में, पर	बच्चों में, पर
सम्बोधन	–	हे बच्चे!	हे बच्चो!

अब ऊपर दी गई 'बच्चा' शब्द की रूप-रचना को ध्यान में रखकर 'घोड़ा' शब्द की संज्ञा-रूपावली नीचे दी गई तालिका में कीजिए :

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	....	....
कर्म	....	....
करण	....	....
सम्प्रदान	....	....
अपादान	....	....
सम्बन्ध	....	....
अधिकरण	....	....
सम्बोधन	....	....

9. पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

भारतीय – भारतीयता
राष्ट्रीय – राष्ट्रीयता
स्वतन्त्र – स्वतन्त्रता
सामाजिक – सामाजिकता
नैतिक – नैतिकता

****

H3P9S4

पाठ-बारह

मणिपुर के कुछ जनजातीय त्योहार

रोचक, संक्षेप, सम्बन्धित, कटाई, सह-भोज, अन्यथा, हास-परिहास, आदत, बघारना।

इम्फाल

5 जुलाई, 2004

प्रिय सखी रेशमा,

नमस्कार।

बहुत दिनों बाद तुम्हारी चिट्ठी मिली। इस बीच मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख सकी। कारण यह रहा कि मैं पिछले कुछ समय से मणिपुर के जनजातीय त्योहारों का अध्ययन कर रही हूँ। इनकी जानकारी बड़ी रोचक है। लो, तुम भी थोड़ा जानो।

मणिपुर में कई जनजातियाँ हैं। वे अलग-अलग समय में अलग-अलग तरह के अनेक त्योहार मनाती हैं। यहाँ मैं सिर्फ चार ही जनजातियों के कुछ प्रमुख त्योहारों के बारे में संक्षेप में लिखती हूँ। उन चार जनजातियों के नाम हैं - थादौ, ताङ्खुल, माओ और कबुइ।

''चाङ्आइ'' और ''शाआइ'' थादौ जनजाति के प्रमुख त्योहार हैं। ''चाङ्आइ'' खेती से सम्बन्धित त्योहार है। इसमें मुख्य रूप से महिलाएँ भाग लेती हैं। ''शाआइ'' पुरुषों का त्योहार है। नाचना-गाना और खिलाना-पिलाना इन त्योहारों का मुख्य अंग है।

''लुइरा'', ''यारा'', ''मङ्खप'', ''चुम्फा'' तथा ''थिशम'' ताङ्खुल जनजाति के पाँच महत्वपूर्ण त्योहार हैं। ''लुइरा'' नव-वर्ष के आरम्भ का त्योहार है और फरवरी माह में मनाया जाता है। ''यारा'' युवक-युवतियों का त्योहार है और मई माह में मनाया जाता है। खान-पान और नाच-गान इस जनजाति के त्योहारों का मुख्य अंग है।

''चुथुनि'', ''चुजुनि'', ''सलेनि'' और ''ओनुनि'' माओ जनजाति के प्रमुख त्योहार हैं। ये त्योहार खेती से सम्बन्धित हैं। ''चुथुनि'' धान की कटाई से सम्बन्धित त्योहार है और जनवरी महीने में छह दिन तक मनाया जाता है। ''चुजुनि'' जुन महीने में मनाया जाता है। ''सलेनि'' पाँच दिन तक मनाया जाता है। ''ओनुनि'' सितम्बर महीने में केवल एक ही दिन मनाया जाता है। इस जनजाति के त्योहारों में भी खान-पान और नाच-गान होते हैं।

''गानङाइ'', ''रिङाइ'', ''नानुङाइ'', ''तुनङाइ'', ''फुक्फातङाइ'' आदि कबुइ जनजाति के मुख्य त्योहार हैं। इनमें से ''गानङाइ'' सब से महत्वपूर्ण त्योहार है और धान की फसल कटने के बाद मनाया जाता है। युवक-युवतियों का रंग-बिरंगी पोषाक पहन कर नाच-गान करना और गाँव वालों का सह-भोज इस त्योहार का मुख्य अंग है।

आज इतना ही, अन्यथा तुम सोचोगी कि मैं अपना ज्ञान बघार रही हूँ। हास-परिहास की तुम्हारी आदत तो अभी बदली नहीं होगी। तुम्हारे साथ कई पुरानी सहेलियाँ हैं, बड़ा आनन्द आता होगा। सब को मेरी याद दिलाना। उनसे भी पत्र लिखने के लिए कहना।

चाचीजी और चाचाजी को मेरा प्रणाम कह देना।

प्यार के साथ।

तुम्हारी सहेली
चनम मेमा देवी

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

रोचक	=	रुचने वाला, दिलचस्प, प्रिय।
कटाई	=	काटने का काम।
सह-भोज	=	बहुत-से आदमियों का एक साथ बैठकर भोजन करना।
बघारना	=	पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना।
हास-परिहास	=	मजाक, हँसी-दिल्लगी।
आदत	=	स्वभाव।
आनन्द	=	खुशी, हर्ष।
अन्यथा	=	नहीं तो।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मेमा किसके नाम चिट्ठी लिखती है?

(ख) थादौ जनजाति के मुख्य त्योहार कौन-कौन से हैं?

(ग) ''चाङ्आइ'' कैसा त्योहार है?

(घ) थादौ जनजाति के मुख्य त्योहारों का मुख्य अंग क्या है?

(ङ) ताङ्खुल जनजाति के कौन-कौन से त्योहार होते हैं?

(च) ''लुहरा'' कैसा त्योहार है और कब मनाया जाता है?

(ज) माओ जनजाति के खेती से सम्बन्धित त्योहार कौन-कौन से हैं?

(झ) ''चुथुनि'' कैसा त्योहार है और कब मनाया जाता है?

(ञ) माओ जनजाति के त्योहार कितने-कितने दिन तक मनाए जाते हैं?

(ट) कबुइ जनजाति के मुख्य त्योहार कौन-कौन से हैं?

(ठ) ''गानङाइ'' कब मनाया जाता है?

(ड) मणिपुर की जनजातियों के त्योहारों के मुख्य अंग क्या हैं?

(ढ) प्रस्तुत पाठ के अतिरिक्त मणिपुर के कुछ और जनजातियों और उनके त्योहारों के नाम लिखिए।

(ण) यह पाठ पत्र-शैली में लिखा हुआ है, अनौपचारिक निजी पत्र लेखन के आवश्यक अंगों तथा पत्र के कलेवर को समझने की कोशिश कीजिए।

(त) मणिपुर के जनजातीय त्योहारों में निहित समानता और असमानताओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

रोचक ....

महत्वपूर्ण ....

आरम्भ ....

प्रमुख ....

कटाई ....

पोषाक ....

अन्यथा ....

आनन्द ....

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) ''चाङ्आइ'' त्योहार में महिलाएँ भाग लेती हैं। ☐

(ख) ''सलेनि'' केवल एक दिन मनाया जाता है। ☐

(ग) ''यारा'' युवक-युवतियों का त्यौहार है। ☐

(घ) ''पुक्फातङाइ'' कबुइ जनजाति का त्योहार है। ☐

(ङ) ''रिङाइ'' माओ जनजाति का त्योहार है। ☐

5. तालिका को ध्यान से देखिए और वाक्य बनाइए :

शाआइ मङ्खप ओनुनि तुनङाइ	थादौ ताङ्खुल माओ कबुइ	जनजाति	का	त्योहार है।

....

....

....

....

6. निम्नांकित त्योहार किस जनजाति के हैं?

लुइरा – ....

चुथुनि – ....

नानुङाइ – ....

चुम्फा – ....

थिशम – ....

चुजुनि – ....

गानङाइ – ....

7. शुद्ध उच्चारण से पढ़िए और एक-एक वाक्य बनाइए :

राज्य ....

स्थाई ....

मातृभूमि ....

पश्चात ....

कर्तव्य ....

अध्यात्मिक ....

क्षत्रिय ....

कन्या ....

सामान्य ....

8. पत्र के आवश्यक अंगों के आधार पर अपने किसी मित्र/सहेली को 'निङोल चाक्कौबा' के बारे में बताकर छह वाक्यों में एक पत्र लिखिए :

****

G9P3W2

पाठ-तेरह

जेनी और माइकल

छत, प्रकृति, देन, परेशान, शक्कर, नल, वश, टोंटी, बर्बाद, नगरपालिका, सार्वजनिक, लापरवाही, नुकसान, बीज, अभियन्ता, बोना।

जेनी और माइकल रास्ते में मिले। अचानक वर्षा होने लगी। माइकल ने जेनी से पानी रुकने तक अपने घर में ठहरने को कहा। जेनी माइकल के घर आ गई। जेनी घर की छत से जोर-जोर से पानी गिरने की आवाज सुनकर कहने लगी।

जेनी : माइकल, तुम्हारे घरकी छत से जो पानी गिर रहा है वह सब कहाँ जाता है?

माइकल : क्यों? यह तो प्रकृति की देन है, कहीं भी जाए, तुम क्यों परेशान होती हो? छोड़ो यह सब, चाय पी लो।

जेनी : माइकल, पहले यह बताओ, चाय किस चीज से बनती है?

माइकल : लो, इतना भी नहीं जानती ! चाय तो पानी, चाय पत्ती, शक्कर और दूध से बनती है।

जेनी : तुम लोग रोज के प्रयोग का पानी कहाँ से लेते हो?

माइकल : नल से।

जेनी : अगर नल में पानी आना बन्द हो जाए तो?

माइकल : ऐसा कैसे हो सकता है?

जेनी : क्यों नहीं हो सकता? जब जमीन का सारा पानी खतम हो जाएगा तो नल में कहाँ से आएगा?

माइकल : तो क्या करना चाहिए?

जेनी : हमें पानी बचाना चाहिए।

माइकल : वह कैसे?

जेनी : अपनी गन्दी आदतों को वश में करके।

माइकल : कौन-सी गन्दी आदतें?

जेनी : हम ब्रश करते समय नल खुला रखते हैं, जिससे अकारण पानी बहता रहता है। नहाने के बाद भी टोंटी बन्द नहीं करते, जिससे पानी बर्बाद होता है। ये दोनों गन्दी आदतें हैं।

माइकल : और कैसे पानी बर्बाद होता है?

जेनी : नगरपालिका सार्वजनिक स्थानों पर नल लगाती है। कुछ लोग उनकी टोंटियाँ खोल ले जाते हैं, जिससे पानी बेकार नाली में बहता रहता है। कई बार कोई सार्वजनिक नल पर पानी पीकर टोंटी खुली छोड़ देता है, जिससे पानी बहने लगता है। हम वहाँ से गुजरते समय पानी के बेकार बहने पर ध्यान नहीं देते और टोंटी बन्द नहीं करते। इससे बहुत पानी बर्बाद होता है।

माइकल : तुमने मेरी आँखें खोल दीं जेनी। मैं जानता ही नहीं था कि हम लोग अपनी गन्दी आदतों और लापरवाही के चलते अपना कितना बड़ा नुकसान कर रहे है !

जेनी : पर माइकल, इतना ही काफी नहीं है। हमें जल को बर्बाद हो जाने से भी बचाना चाहिए और जल की खेती पर भी ध्यान देना चाहिए।

माइकल	:	जल की खेती ! यह क्या होती है?
जेनी	:	देखो, किसान खेत में बीज बोता है और बदले में फसल उगाता है। ठीक है न !
माइकल	:	हाँ।
जेनी	:	इसी तरह हम लोग वर्षा का पानी जमीन के अन्दर छोड़ दें तो बदले में हमें साफ पानी मिलेगा।
माइकल	:	इसका क्या उपाय है?
जेनी	:	तुम्हारी छत से वर्षा का पानी बह कर नाली में जा रहा है और बर्बाद हो रहा है। इसी पानी को एक पाइप के सहारे जमीन के नीचे बहने वाली जल-धारा तक पहुँचा दिया जाए तो पृथ्वी का जल-स्तर बढ़ जाएगा। तब हमें खेती और दैनिक प्रयोग के लिए आसानी से पानी मिलता रहेगा।
माइकल	:	यह तो तुमने सही कहा। इतनी सारी बातें तुम्हें किसने बताई।
जेनी	:	मेरे दादाजी जल-कल विभाग में अभियन्ता थे। वही मुझे ये बताते रहते हैं।
माइकल	:	क्या मुझे भी अपने दादाजी से मिलाओगी ? मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।
जेनी	:	ठहरो, चाय खतम कर लूँ, फिर चलते हैं।
माइकल	:	जरा जल्दी करो।
जेनी	:	लो, चाय भी खतम हो गई और वर्षा भी बन्द हो गई, अब चलो।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अचानक	=	यकायक।
छत	=	मकान की पक्की पाटन का पक्का और खुला फर्श।
देन	=	वह उपयोगी या अमूल्य वस्तु जो किसी को दी जाए।
शक्कर	=	चीनी।

वश = काबू।
टोंटी = पानी गिराने की नली।
अभियन्ता = इंजीनियर।
सार्वजनिक = सब से सम्बन्ध रखने वाला।

2. उत्तर दीजिए :

(क) माइकल ने जेनी से कब तक अपने घर में ठहरने को कहा?

(ख) चाय किस चीज से बनती है?

(ग) पानी सम्बन्धी मनुष्य की गंदी आदतें क्या-क्या हैं?

(घ) पानी कैसे बर्बाद होता है?

(ङ) जल की खेती कैसे होती है?

(च) जेनी ने जल की खेती से सम्बन्धित बातें कैसे प्राप्त की?

(छ) जल-खेती के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए तुम्हें किस-किससे सम्पर्क करना है?

(ज) जेनी के दादा जी से मिलकर माइकल को जल खेती के सम्बन्ध में क्या-क्या जानकारी प्राप्त की होगी? लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अचानक --
परेशान --
गन्दा --
बर्बाद --
सार्वजनिक --
लापरवाही --
दैनिक --

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) पानी प्रकृति की देन है। ☐

(ख) नहाने के बाद टोंटी बन्द नहीं करना गन्दी आदत है। ☐

(ग) नगरपालिका सार्वजनिक स्थानों पर नल नहीं लगाती है। ☐

(घ) हमें जल को बर्बाद होने से बचाना चाहिए। ☐

(ङ) जेनी के दादाजी जल-कल विभाग में अभियन्ता थे। ☐

5. वाक्य-पूरा कीजिए :

(क) जेनी माइकल के ---------------------------------- ।

(ख) जल की खेती पर भी -------------------------------- ।

(ग) इसके बहुत पानी ---------------------------------- ।

(घ) वही मुझे ये बातें --------------------------------- ।

(ङ) चाय खतम कर लूँ, -------------------------------- ।

6. पढ़िए और समझिए :

हम ब्रश करते समय नल खुला रखते हैं, जिससे अकारण पानी बहता रहता है।

नहाने के बाद टोंटी बन्द नहीं करते, जिससे पानी बर्बाद होता है।

बच्चा धूल में खेलता है, जिससे बीमार पड़ जाता है।

तुम सही समय पर नहीं पहुँचे, जिससे काम पूरा नहीं हुआ।

तुम लोगों में मतभेद है, जिससे एकता नहीं है।

ऊपर के उदाहरणों में दो-दो वाक्यों को 'जिससे' शब्द द्वारा जोड़ कर एक-एक वाक्य बनाया जाता है। इसी प्रकार नीचे लिखे वाक्यों में खाली जगहें भरिए :

लगातार वर्षा होती रही, जिससे ------------------------------ ।

उसने गन्दा पानी पिया, जिससे ------------------------------ ।

रामने मोहन को पीटा, जिससे ------------------------------ ।

तुमने नियम तोड़ा, जिससे ------------------------------ ।

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

सन्धि = वर्ण + वर्ण → परिवर्तन

वर्णों के परस्पर मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि और विसर्ग सन्धि इसके प्रकार हैं। स्वर सन्धि के भी (दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण, अयादि, पररूप और पूर्वरूप) सात भेद होते हैं । इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :-

स्वर सन्धि : राम + अवतार = रामावतार (अ+अ = आ)

रमा + ईश = रमेश (आ+ई = ए)

एक + एक = एकैक (अ+ए = ऐ)

यदि + अपि = यद्यपि (इ+अ = य)

ने + अन = नयन (ए+अ = अय)

दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ (अ+ओ = ओ)

मनो + अभिलाषा = मनोभिलाषा (ओ+अ = ओ)

व्यंजन सन्धि : जगत् + नाथ = जगन्नाथ (व्यंजन + व्यंजन)

जगत् + ईश = जगदीश (व्यंजन + स्वर)

विसर्ग सन्धि : नि : + आधार = निराधार (विसर्ग + स्वर)

नि : चल = निश्चल (विसर्ग + व्यंजन)

सन्धि के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी के लिए अध्यापक की सहायता लीजिए।

8. नीचे दिए गए शब्दों के सन्धि/विग्रह कीजिए :

सन्धि :

गै + अक	= ____________	भानु + उदय	= ____________
देव + ऋषि	= ____________	वन + औषधि	= ____________
अनु + अय	= ____________	मातृ + आज्ञा	= ____________
उत् + लेख	= ____________	नम : + ते	= ____________

विग्रह :

उद्धार	= ____________	+ ____________
अनुच्छेध	= ____________	+ ____________
निस्संकोच	= ____________	+ ____________
तमोगुण	= ____________	+ ____________

****

I2X4M4

पाठ-चौदह

मणिपुर की सुन्दर धरती

रमणीक, शोभा, शिखर, बदली, अनन्त, अनुपम, निर्मल, भाना, बाँचना।

रमणीक पहाड़ों की शोभा।
सब के मन को ही भाती है।
शिखरों को छूकर बदली भी।
मन-मोहक गीत सुनाती है।।

झीलों के जल में खिले कमल।
नदियों में लहरें नाच रहीं।
खेतों में फसलें झूम-झूम।
सुन्दर छवियों को बाँच रहीं।।

मणिपुर की सुन्दर धरती है।
अनन्त प्रकृति की रखवाली।
शोभा इसकी अनुपम कितनी।
निर्मल कोमल भोली-भाली।।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

रमणीक = सुन्दर, मनोहर।
शोभा = प्रभा, सौन्दर्य, चमक।
भाना = अच्छा लगना, फबना।
बदली = बादलों का छोटा समूह, घटा।
बाँचना = पढ़ना।
अनन्त = असीम, अपार, जिसका अन्त न हो।
अनुपम = बेजोर, सर्वोत्तम।
निर्मल = जिसमें मल न हो, स्वच्छ, शुद्ध।

2. उत्तर दीजिए :

(क) पहाड़ों की शोभा क्या करती है?
(ख) फसलें क्या करती है?
(ग) कवि मणिपुर की धरती के बारे में क्या कहता है?
(घ) इस कविता में कवि किन-किन चीजों के माध्यम से यह प्रकट करता है कि मणिपुर की धरती सुन्दर है?
(ङ) 'मणिपुर की सुन्दर धरती' कविता का मूल भाव लिखिए।
(च) इस कविता को चित्रित करने के लिए पाठ में दिए गए चित्र में किन-किन रंगों का प्रयोग करना होगा?
(छ) आपके विचार में और किन-किन चीजों के माध्यम से मणिपुर की धरती की सुन्दरता प्रकट की जा सकती है?
(ज) 'मणिपुर की धरती सुन्दर है'। क्या आप इसमें सहमत है?

(झ) क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अपने पड़ोसी राज्यों की धरती की सुन्दरता कैसी होगी?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

रमणीक ....

अनन्त..

अनुपम ....

निर्मल ....

शोभा ....

प्रकृति..

4. पूरा कीजिए :

रमणीक .... ।

सब के मन को ....।

.... बदली भी।

.... गीत ....॥

5. सरल अर्थ लिखिए :

झीलों के जल में खिले कमल।
नदियों में लहरें नाच उठीं।
खेतों में फसलें झूम-झूम।
सुन्दर छवियों को बाँच रहीं॥

----

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

शोभा	—	स्त्रीलिंग	फसल	—	स्त्रीलिंग
शिखर	—	पूल्लिंग	छवि	—	स्त्रीलिंग
गीत	—	पूल्लिंग	धरती	—	स्त्रीलिंग
लहर	—	स्त्रीलिंग	प्रकृति	—	स्त्रीलिंग

7. लिंग बदलिए :

चूहा	____________	गुणवान	____________
देवी	____________	कवि	____________
लड़का	____________	प्रिया	____________
हंसनी	____________	नौकरानी	____________
स्त्री	____________	अध्यापक	____________
मोर	____________	कुतिया	____________

****

Q6D3A1

पाठ -पन्द्रह

राजा पामहैबा

प्रसिद्‌ध, धारण, राज्याधिकार, आक्रमण, नियन्त्रण, स्मृति, दीक्षा, शव, प्रजावत्सल, सुरक्षित, गुजरना।

पामहैबा मणिपुर के एक प्रसिद्‌ध राजा थे। उन्होंने सन्‌ 1709 से 1748 तक मणिपुर पर शासन किया। उनके शासन-काल में मणिपुर ने एक नया रूप धारण किया। पामहैबा के पिता का नाम था चराइरोङ्‌बा और माता का सापम चनु नुङ्‌थिल चाइबी। बचपन से ही पामहैबा वीर और साहसी थे। राजकुमार होने पर भी पामहैबा का बचपन थाङगाल नामक जनजाति के बीच एक पहाड़ी गाँव में गुजरा, इसलिए उनके जीवन के साथ पहाड़ी क्षेत्रों का अटूट सम्बन्ध बन गया।

बड़ा होने पर पामहैबा को राज्याधिकार मिला। उन्होंने अपने पिता चराइरोङ्‌बा की अन्तिम इच्छा के अनुसार मणिपुर के पड़ोसी देश अवा (बर्मा) पर आक्रमण किया। उस समय अवा का कोई संगठित रूप नहीं था। पूरा देश अनेक स्वतन्त्र राज्यों में बँटा था। इसी का लाभ उठा कर पामहैबा ने अवा के समसोक नामक राज्य के राजा को पराजित कर दिया। फिर उन्होंने एक दूसरे राज्य के राजा तलाइ को पराजित कर उसकी राजधानी येवा

को हासिल कर लिया। इस तरह उन्होंने एक-एक कर अवा के 46 स्वतन्त्र राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया। इन राज्यों के नियन्त्रण के लिए उन्होंने इन सब को एक साथ संगठित किया। उस संगठित क्षेत्र का नाम अलाउमैयाजी रखा और उसका राजा इउ-अउजया को बनाया गया। पामहैबा ने येवा को अलाउमैयाजी की राजधानी बनाया। इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति में उन्होंने अवा के कौमुदो फया नामक मन्दिर के मुख्यद्वार पर अपनी तलवार से एक चिह्न बना दिया।

अवा के बाद पामहैबा ने सन् 1734 में त्रिपुरा के राजा छत्रजीत नारायण को पराजित किया। इतना ही नहीं, उन्होंने उत्तर-पूर्वी भारत की विभिन्न पहाड़ी जनजातियों के क्षेत्र भी अपने साम्राज्य में सम्मिलित किए।

पामहैबा केवल शक्तिशाली राजा ही नहीं थे, वे एक समाज-सुधारक भी थे। उन्होंने मणिपुर के परम्परागत धर्म को छोड़ कर रामानन्दी वैष्णव धर्म को अपनाया। उन्होंने शान्तदास गोसाई से दीक्षा ली और शान्तदास को ही अपना राज-गुरू बनाया।

राजगुरु शान्तदास ने पामहैबा को 'गरीबनवाज' नाम दिया था। इसका अर्थ होता है, 'गरीबों पर कृपा करने वाला'। पामहैबा असहाय, दुखी और निर्धन प्रजा का बहुत ध्यान रखते थे, इसी कारण उन्हें यह नाम दिया गया।

मणिपर में अनेक वीर, साहसी, कला-प्रिय, प्रजावत्सल राजा हुए हैं। पामहैबा उन्हीं में से एक थे। उन्होंने मणिपुर की सीमाओं का विस्तार किया और उन्हें सुरक्षित बनाया। मणिपुर के इतिहास में उन्हें सदा एक महान राजा के रूप में याद किया जाएगा।

पामहैबा की मृत्यु सन् 1751 में हुई।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

गुजरना	=	बीतना।
अटूट	=	न टूटने वाला, मजबूत, अखण्डित।
आक्रमण	=	टूट पड़ना, हमला, चढ़ाई।
हासिल	=	जो कुछ हाथ लगा हो, लब्ध।
नियन्त्रण	=	प्रतिबन्धन, वश में रखना।
स्मृति	=	स्मरण, याद।
साम्राज्य	=	पूर्ण प्रभुता, आधिपत्य, शासनाधीन बहुत बड़ा क्षेत्र।
दीक्षा	=	मन्त्रोक्त रीति से किसी देवता का मन्त्र ग्रहण करने की क्रिया।
प्रजावत्सल	=	प्रजा को पुत्र-सा प्रेम करने वाला।

2. उत्तर दीजिए :

(क) पामहैबा ने कब मणिपुर पर शासन किया?

(ख) पामहैबा के माता-पिता का नाम क्या था?

(ग) बचपन में पामृहैबा कैसे थे?

(घ) पामहैबा के जीवन के साथ पहाड़ी क्षेत्रों का अटूट सम्बन्ध किस कारण से था?

(ङ) पामृहैबा ने अपने पिता की अन्तिम इच्छा के अनुसार क्या किया?

(च) पामहैबा के शासन-काल में अवा की स्थिति कैसी थी?

(छ) अवा की असंगठित स्थिति का फायदा उठा कर पामृहैबा ने क्या किया?

(ज) पामहैबा ने अवा देश को संगठित कर क्या किया?

(झ) पामहैबा ने ऐतिहासिक घटना की स्मृति में क्या किया?

(ञ) अवा के बाद पामहैबा ने किसको पराजित किया?

(ट) पामहैबा के राज-गुरु कौन थे?

(ठ) राज-गुरु ने पामहैबा को "गरीबनवाज" नाम क्यों दिया?

(ड) पामहैबा कैसे राजा थे?

(ढ) पामहैबा की मृत्यु कब हुई?

(ण) किस देश के लोगों को 'अवा' कहकर जाना जाता है? इस देश का वर्तमान नाम और राजधानी का पुराना और वर्तमान नाम लिखिए।

(त) मणिपुर राज्य के पड़ोसी राज्यों और देश के नाम लिखिए।

(थ) पुराने राजाओं-महाराजाओं के काल और इस आधुनिक काल के शासन प्रणाली पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अटूट..

राज्याधिकार..

आक्रमण ....

संगठित ....

नियन्त्रण..

स्मृति..

प्रजावत्सल ....

पराजित ....

हासिल ....

4. तालिका को ध्यान से पढ़िए तथा खण्ड 'क' और 'ख' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
पामहैबा के शासन-काल में	अलाउमैयाजी को राजधानी बनाया।
बचपन से ही पामहैबा	अपना राज-गुरु बनाया।
बड़ा होने पर	मणिपुर ने एक नया रूप धारण किया।
पामहैबा ने येवा के	वीर और साहसी थे।
पामहैबा ने शान्तदास को	पामहैबा को राज्याधिकार मिला।

....

....

....

....

....

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) पामहैबा मणिपुर के एक प्रसिद्ध राजा थे। ☐

(ख) पामहैबा ने समसोक के राजा तलाइ को पराजित किया। ☐

(ग) पामहैबा ने अवा के 66 स्वतन्त्र राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया। ☐

(घ) पामहैबा एक समाज-सुधारक भी थे। ☐

(ङ) पामहैबा अवा के भी राजा थे। ☐

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) 'का, के, की' का प्रयोग सम्बन्ध बताने के लिए होता है। जैसे –

अचौ इबोतोन का पुत्र है।

राम और लक्ष्मण दशरथ के पुत्र थे।

सीता राम की पत्नी थी।

(ख) 'का, के, की' की तरह 'रा, रे, री' का प्रयोग सम्बन्ध बताने के लिए होता है। जैसे –

वह मेरा भाई है।

तोम्बा तेरा पुत्र हैं।

वे तुम्हारे लड़के हैं।

आप हमारे गुरु है।

वह तुम्हारी माँ है।

तुम मेरी बहन हो।

(ग) ''का'' और ''रा'' का प्रयोग पुल्लिंग एक वचन में होता है। जैसे –

पिसक मोहन का लड़का है।

चाओबा मेरा पुत्र है।

वह तुम्हारा भाई है।

(घ) ''के'' और ''रे'' का प्रयोग पुल्लिंग बहुवचन में होता है। जैसे –

वे तुम्हारे लड़के हैं।

वे उसके भाई हैं।

ये दोनों मेरे बेटे हैं।

आप उसके गुरु हैं।

(ङ) ''की'' और ''री'' का प्रयोग स्त्रीलिंग एकवचन और बहुवचन में होता है। जैसे –

आप मेरी माँ हैं।

वह उसकी बहन हैं।

वे तुम्हारी बेटियाँ हैं।

8. शुद्ध कीजिए :

(क) वह उसके लड़का हैं।

(ख) वे तुम्हारे बेटियाँ हैं।

(ग) तोम्बा रमेश के छोटा भाई है।

(घ) आप मेरा पिताजी हैं।

(ङ) तुम्हारा जुते यहाँ हैं।

(च) यह हमारे कमरा है।

(छ) आप मेरे माँ हैं।

(ज) तू उसका बहन है।

(झ) वे हमारा दोस्त हैं।

(ञ) यह तेरा कुर्सी है।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

(च) ....

(छ) ....

(ज) ....

(झ) ....

(ञ) ....

****

Q8G5N7

पाठ-सोलह

खोङ्‌जोम युद्‌ध

दास्तान, विद्‌यमान, हस्तक्षेप, प्रतिशोध, आक्रमण, मुकाबला, संकट, योद्‌धा, नेतृत्व, मुट्‌ठी भर, न्योछावर, घमासान, अस्ताचल।

खोङ्‌जोम इम्फाल से लगभग 28 कि०मी० दूर एक ऐतिहासिक स्थान है। वहाँ मणिपुर के वीरों ने आजादी की रक्षा के लिए अन्तिम युद्‌ध किया था। इस अन्तिम युद्‌ध की दर्दभरी दास्तान आज भी प्रत्योक मणिपुरी के हृदय में विद्‌यमान है।

सन् 1891 की बात है। उस समय मणिपुर एक स्वतन्त्र राज्य था। लेकिन अंगरेज मणिपुर के शासन में बार-बार हस्तक्षेप करते थे। परिणामस्वरूप पाँच अंगरेज अधिकारियों को मणिपुर की जनता ने मौत के घाट उतार दिया। इसका प्रतिशोध लेने के लिए अंगरेजों ने मणिपुर पर चढ़ाई कर दी।

अंगरेजों ने मणिपुर पर तीन ओर से आक्रमण किया। मणिपुर की सेना ने उनका डट कर मुकाबला किया, लेकिन आधुनिक हथियारों की कमी से उसके सामने अनेक संकट आए। मणिपुर के योद्‌धाओं ने एक के बाद एक वीरगति पाई।

अन्त में पाओना ब्रजवासी के नेतृत्व में मणिपुर की स्वाधीनता की अन्तिम लड़ाई खोङ्जोम नामक स्थान पर हुई। पाओना एक वीर, साहसी और कुशल योद्धा थे। उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना बलिदान देने का प्रण किया। उन्होंने अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ खोङ्जोम नदी के किनारे अंगरेजों का सामना किया। अंगरेज सेना आधुनिक साधनों से सम्पन्न थी; इसलिए पाओना मेजर ने राजमहल से तोपें माँगीं। लेकिन उन्हें एक भी तोप नहीं मिली। फिर भी मणिपुर की सेना ने अपना साहस नहीं खोया। पाओना के नेतृत्व में सैकड़ों मणिपुरी सैनिकों ने अपने प्राण मातृभूमि पर न्योछावर कर दिए। घमासान युद्ध हुआ । युद्ध में मणिपुर की जीत की सम्भावना बिलकुल नहीं रही। इसके बावजूद पाओना रणभूमि को छोड़ कर जाने के लिए तैयार नहीं हुए। उन्होंने बचे हुए मणिपुरी सैनिकों को अपने घर लौटने की आज्ञा दी। पहले सैनिकों ने उनकी बात नहीं मानी। उन्होंने अपने सेनानायक के साथ ही मरने-मिटने की इच्छा प्रकट की। पाओना मेजर ने आदेश दिया कि वे राजधानी लौट कर अपनी शक्ति बढ़ाएँ तथा मणिपुर की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए फिर से युद्ध करें।

अन्त में मणिपुरी सैनिकों को पाओना मेजर की आज्ञा माननी पड़ी। पाओना मेजर अन्तिम साँस तक मातृभूमि के लिए लड़ते रहे। उन्होंने खोङ्जोम नदी के किनारे वीरगति पाई। पाओना की वीरगति पाते ही खोङ्जोम का युद्ध भी समाप्त हो गया। इसी के साथ मणिपुर की स्वाधीनता का सूर्य भी अस्ताचल की ओर बढ़ गया।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दर्दभरी	=	पीड़ादायक, व्यथा से पूर्ण।
दास्तान	=	कहानी, विवरण।
हस्तक्षेप	=	दूसरों की बात या काम में दखल देना।
प्रतिशोध	=	बदला लेना, प्रतिकार।
आक्रमण	=	हमला।
मुकाबला	=	बराबरी करना, आमना-सामना, लड़ाई।
योद्धा	=	युद्ध करने वाला, वीर।
प्रण	=	प्रतिज्ञा।
न्योछावर	=	बलि, त्याग, उत्सर्ग।
घमासान	=	घोर, भयानक।
अस्ताचल	=	पश्चिम का वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना माना जाता है।

2. उत्तर दीजिए :
   (क) खोङ्जोम में क्या हुआ था?
   (ख) मणिपुर की जनता ने पाँच अंगरेज अधिकारियों को क्यों मार डाला?
   (ग) अंगरेज अधिकारियों की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए अंगरेजों ने क्या किया?
   (घ) मणिपुर की सेना ने क्या किया?
   (ङ) मणिपुर की सेना के सामने संकट क्यों आए?
   (च) पाओना ब्रजवासी के नेतृत्व में खोङ्जोम पर क्या हुआ?

(छ) पाओना कैसे व्यक्ति थे?

(ज) पाओना ने क्या प्रण किया?

(झ) पाओना ने राजमहल से तोपें क्यों माँगीं?

(ञ) तोप न मिलने पर पाओना ने क्या किया?

(ट) पाओना ने मणिपुरी सैनिकों को क्या आदेश दिया?

(ठ) पाओना ने कैसे और कहाँ वीरगति पाई?

(ड) पाओना की मृत्यु होते ही क्या हुआ?

(ढ) ''खोङ्जोम युद्ध दिवस'' राज्य स्तर पर अवकाश कबसे शुरू हुआ?

(ण) खोङ्जोम युद्ध कब हुआ था? उस युद्ध में मणिपुर के हारने का मुख्य कारण क्या था?

(त) खोङ्जोम युद्ध के समय अगर आप भाग ले सकने की उम्र के होते तो क्या करते? कल्पना करके लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

दास्तान..

हस्तक्षेप ....

प्रतिशोध ....

मुकाबला ....

नेतृत्व ....

न्योछावर ....

घमासान...

सम्भावना ....

रणभूमि...

अस्ताचल ....

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✘) का निशान लगाइए :

(क) मणिपुर एक स्वतन्त्र राज्य था। ☐

(ख) अंगरेज मणिपुर के शासन में बार-बार हस्तक्षेप करते थे। ☐

(ग) अंगरेजों ने मणिपुर पर चारों ओर से आक्रमण किया। ☐

(घ) मणिपुर सेना आधुनिक साधनों से सम्पन्न थी। ☐

(ङ) पाओना अन्तिम साँस तक मातृभूमि के लिए लड़ते रहे। ☐

5. तालिका को देखिए, पढ़िए और खण्ड 'क' और 'ख' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
मणिपुर की सेना ने	अस्ताचल की ओर बढ़ गया।
पाओना ने देश की स्वतन्त्रता के लिए	पाओना की बात नहीं मानी।
युद्ध में मणिपुर की	अपना बलिदान देने का प्रण किया।
पहले सैनिकों ने	जीत की सम्भावना बिलकुल नहीं रही।
मणिपुर की स्वाधीनता का सूर्य	अंगरेजों का डट कर मुकाबला किया।

....

....

....

....

....

6. पढ़िए और समझिए :

मौत के घाट उतारना = मार डालना

अंगरेज अधिकारियों को मणिपुर की जनता ने मौत के घाट उतार दिया।

पुलिस ने डाकुओं को मौत के घाट उतार दिया।

वीरगति पाना = युद्ध में लड़कर प्राणांत होना।

पाओना ने वीरगति पाई।

देश के सैनिकों ने मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरगति पाई।

7. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) ''ने'' का प्रयोग भूत काल के अपूर्ण भूत को छोड़ कर शेष सभी कालों और पूर्ण वर्तमान (आसन्न भूत) काल में सकर्मक क्रिया के कर्ताओं के साथ होता है, जैसे –

मैंने फल खाया।

चाओबा ने यह पुस्तक ली थी।

उसने रोटी खाई होगी।

शायद उन्होंने यह पुस्तक पढ़ी हो।

यदि आपने वह फिल्म देखी होती !

हमने उसकी बात सुनी है।

(ख) ''लाना'', ''भूलना'', ''बोलना'', - ये सकर्मक क्रियाएँ हैं, परन्तु इनके भूतकालिक क्रिया रूपों के साथ आने वाले कर्ताओं में ''ने'' का प्रयोग नहीं होता। जैसे –

मैं यह कलम लाया।

मैं तुम्हारी बात भूल गया हूँ।

जोसेफ धीरे से बोला।

(ग) ''खाँसना'' और ''छींकना'', - ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के साथ आने वाले उपर्युक्त कालों के कर्ताओं में ''ने'' का प्रयोग विकल्प में होता है। जैसे –

वह जोर से खाँसा/उसने जोर से खाँसा।

माँ छींकी/माँने छींक दिया।

(घ) ''थूकना'' अकर्मक क्रिया है। इस क्रिया के साथ आने वाले उपर्युक्त कालों के कर्ताओं में ''ने'' का प्रयोग होता है। जैसे –

रहीम ने थूका।

(ङ) ''सकना'', ''लगना'', ''चुकना'', ''पाना'', ''रहना'', ''बैठना'' - ये क्रियाएँ सहायक क्रियाओं के रूप में हों तो सकर्मक क्रिया कर्ताओं में उपर्युक्त कालों में ''ने'' का प्रयोग नहीं होता। जैसे –

मैं नहीं खा सका।

वह रोटी खाने लगा।

आप यह चित्र देख चुके हैं।

साँप मेढक को निगल गया है।

अब तो मैं ठीक से देख पाया।

वह दिन भर काम करता रहा।

तुम ऐसा काम क्यों कर बैठे हो?

8. वाक्य शुद्ध कीजिए :

(क) मैं दाल खाया

(ख) वे यह पुस्तक पढ़े होंगे।

(ग) मैंने एक भी नहीं देख पाया।

(घ) उसने जोर से बोला।

(ङ) हमने पत्र नहीं लिख सका।

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

****

K1A6N7

पाठ-सत्रह

हमारी संसद

लोकतन्त्र, आधार-स्तंभ, व्यवस्थापिका, कार्य-पालिका, न्याय-पालिका, लागू, क्रियान्वयन, सदन, अध्यादेश, पद्धति, प्रत्यक्ष, निवृत्त, अध्यक्ष, निर्वाचन, अधिवेशन, कल्याण।

लोकतन्त्र के मूलत: तीन आधार-स्तंभ हैं – व्यवस्थापिका, कार्य-पालिका और न्याय-पालिका। चौथे स्तंभ के रूप में प्रेस का नाम लिया जाता है।

व्यवस्थापिका नियमों का निर्माण करती है, कार्य-पालिका उन्हें लागू करती है। और न्याय-पालिका उनके सही-सही क्रियान्वयन की देखरेख करती है तथा नियम-विरुद्ध कार्य करने वालों के लिए दण्ड निर्धारित करती है।

व्यवस्थापिका को ही संसद कहते हैं। भारत में संसदीय लोकतन्त्र है; अत: हमारे यहाँ संसद को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। भारत की राजधानी दिल्ली में संसद-भवन है। यह एक विशाल गोलाकार भवन है, जिसपर हमारा राष्ट्रीय-ध्वज लहराता रहता है।

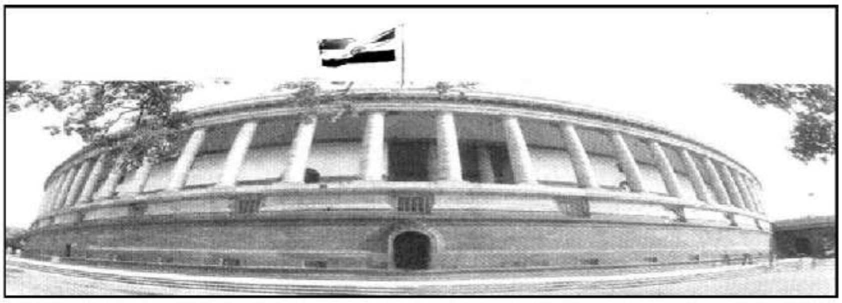

भारतीय संसद के दो सदन हैं — लोक-सभा और राज्य-सभा। लोक-सभा को निचला सदन और राज्य-सभा को ऊपरी सदन भी कहा जाता है। कोई भी नियम, अधिनियम या अध्यादेश इन दोनों सदनों द्वारा ही पास किया जाता है। उसी के बाद उसे लागू किया जा सकता है। राष्ट्रीय-बजट भी संसद द्वारा ही पास किया जाता है।

संसद के सदस्यों को सांसद कहा जाता है। ये जनता के प्रतिनिधि होते हैं, किन्तु लोक-सभा और राज्य-सभा के सांसदों का चुनाव अलग-अलग पद्धति से होता है। लोक-सभा के सांसद प्रत्यक्ष मतदान पद्धति' के माध्यम से सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं। प्रत्येक पाँच वर्ष पर लोक-सभा के सदस्यों के चुनाव के लिए मतदान होता है। इसमें सभी वयस्क लोग मतदान केन्द्रों पर जाकर मतदान करते हैं। इससे पता चलता है कि लोक-सभा के सदस्य का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है।

राज्य-सभा के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष मतदान पद्धति के अन्तर्गत किया जाता है। इसमें राज्यों की विधान-सभाओं के सदस्य मतदान करते हैं। विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति आदि विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध व्यक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा राज्य-सभा के सदस्य के रूप में नामित किए जाते हैं।

राज्य-सभा कभी भंग नहीं होती। उसके एक तिहाई सदस्य प्रत्येक छह वर्ष पर सदस्यता से निवृत्त हो जाते हैं। इसका अर्थ हुआ कि राज्य-सभा के सदस्य का कार्य-काल छह वर्ष का होता है।

दोनों सदनों की कार्यवाही के संचालन हेतु एक-एक अध्यक्ष का निर्वाचन किया जाता है। राज्य-सभा के अध्यक्ष भारत के उप-राष्ट्रपति होते हैं। उनकी अनुपस्थिति में कार्य-संचालन के लिए एक उपाध्यक्ष का निर्वाचन भी किया जाता है। इसी प्रकार लोक-सभा का भी एक अध्यक्ष होता है। उसे लोकसभाध्यक्ष या स्पीकर कहते हैं।

संसद जनता की प्रतिनिधि संस्था मानी जाती है। कहा जा सकता है कि संसद के माध्यम से जनता ही देश का शासन-सूत्र अपने हाथ में संभाले रखती है। सांसद अपने-अपने क्षेत्र की जनता की समस्याओं को संसद के अधिवेशनों में उठाते हैं और विकास की योजनाओं पर विचार-विमर्श करते हैं। कुछ सांसद पूरे देश की समस्याओं की ओर संसद का ध्यान आकर्षित करते हैं। जिस सांसद को अपने क्षेत्र, देश व विश्व की जितनी अधिक जानकारी होती है और जो जितना कुशल वक्ता होता है, वह अपनी जनता का उतना ही अधिक कल्याण करता है।

भारतीय संसद की परम्परा अत्यन्त गौरवशाली है। उसके स्वरूप और कार्य-पद्धति का अध्ययन करने अन्य देशों के सांसद भी आते हैं।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

लोकतंत्र	=	जनता द्वारा शासन-प्रबन्ध, जनतन्त्र।
स्तंभ	=	खम्भा।
व्यवस्थापिका	=	प्रबन्ध करने वाली, विधान बनाने वाली।
कार्य-पालिका	=	कार्य का पालन सुनिश्चित करने वाली।
न्याय-पालिका	=	न्याय का पालन सुनिश्चित करने वाली।
क्रियान्वयन	=	काम के रूप में लागू करना।
अध्यादेश	=	राज्य की अधिपति संस्था द्वारा जारी किया गया आधिकारिक आदेश, अर्डिनेंस।
बजट	=	आय-व्यय का तख्मीना, आय-व्यय का अंदाजा।
नामित	=	किसी काम के लिए किसी का नाम देना, नोमिनेटेड।
निवृत्त	=	सामाप्त किया हुआ, मुक्त।
निर्वाचन	=	चुनाव, वोट द्वारा चुनना।
अधिवेशन	=	बैठक, जलसा।

2. उत्तर दीजिए :

(क) लोकतन्त्र के मुख्य आधार-स्तंभ क्या-क्या हैं?

(ख) लोकतंत्र के तीनों आधार-स्तंभों के कर्तव्य क्या-क्या हैं?

(ग) भारत में किस प्रकार का लोकतन्त्र है?

(घ) भारत में संसद को सर्वोच्च स्थान क्यों प्राप्त है?

(ङ) भारतीय संसद के कितने सदन हैं और कौन-कौन से हैं?

(च) भारतीय संसद में क्या-क्या काम होते हैं?

(छ) सांसद किसे कहा जाता है?

(ज) लोक-सभा के सांसद का चुनाव किस पद्धति से होता है और कैसे?

(झ) राज्य-सभा के सांसदों का चुनाव किस पद्धति से और कैसे होता है?

(ञ) लोक-सभा और राज्य-सभा के सदस्य का कार्य-काल कितने-कितने वर्ष का होता है?

(ट) दोनों सदनों की कार्यवाही का संचालन कौन करता है?

(ठ) राज्य-सभा का अध्यक्ष कौन होता है?

(ड) संसद को जनता की प्रतिनिधि संस्था क्यों माना जाता है?

(ढ) सांसद संसद में क्या काम करते हैं?

(ण) कौन-सा सांसद अपनी जनता का अधिक कल्याण करता है?

(त) अन्य देशों के सांसद भारत क्यों आते हैं?

(थ) भारतीय संसद की राज्य सभा और लोक सभा में कुल कितने-कितने सदस्य (सांसद) होते हैं?

(द) क्या भारत सरकार ने व्यस्क मतदाता की उम्र को निर्धारित किया है?

(ध) 'भारतीय संसद की परम्परा अत्यन्त गौरवशाली है।' क्या आप इसमें सहमत है?

(न) भारतीय संसद से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़िए और अतिरिक्त जानकारी प्राप्त कीजिए।

(प) भारतीय संसद के एक सांसद के आवश्यक गुणों को कल्पना करके लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

क्रियान्वयन ....

देखरेख ....

सर्वोच्च ....

कार्यकाल ....

अप्रत्यक्ष ....

संचालन..

निवृत्त ....

अनुपस्थिति ....

निर्वाचन..

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) प्रेस लोकतन्त्र का चौथा आधार-स्तंभ है। ☐

(ख) राज्य-सभा को निचला सदन कहा जाता है। ☐

(ग) सांसद जनता के प्रतिनिधि होते हैं। ☐

(घ) राज्य-सभा कभी भंग नहीं होती। ☐

(ङ) दोनों सदनों का संचालन एक ही अध्यक्ष करता है। ☐

5. तालिका को ध्यान से देखिए और वाक्य बनाइए :

लोक-सभा		निचला सदन कहा जाता	
		ऊपरी सदन कहा जाता	
		सदस्य प्रत्यक्ष मतदान पद्धति द्वारा चुने जाते	
	का/की	सदस्य अप्रत्यक्ष मतदान पद्धति द्वारा चुने जाते	
		सदस्य का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता	
		सदस्य का कार्यकाल छह वर्ष का होता	
राज्य-सभा		अध्यक्ष भारत के उपराष्ट्रपति होते	है/हैं

....

....

....

....

....

....

....

6. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

''के लिए'' का प्रयोग तब होता है जब संज्ञा या सर्वनाम के लिए कुछ किए जाने या कुछ दिए जाने का बोध होता है। जैसे –

हम जीने के लिए खाते हैं।

सदस्य चुनने के लिए मतदान होता है।

हम सदा अपने स्वास्थ्य के लिए सोचते हैं।

बीमार बेटे के लिए दवा मँगवा लो।

इबोमचा सच्चाई के लिए लड़ता है।

7. ''के लिए'' का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए :

....

....

....

8. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

एकवचन	बहुवचन
पत्ता	पत्ते
पिता	पिता
राजा	राजा
आदमी	आदमी
गति	गतियाँ
बेटी	बेटियाँ
कुटिया	कुटियाँ
आँख	आँखें
लता	लताएँ

बहुवचन के प्रयोग : कहीं विशेष अवस्थाओं में एक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। संज्ञा आदि का बहुवचन में प्रयोग होने पर उनसे सम्बद्ध क्रिया आदि का भी रूप बहुवचन हो जाता है।

निम्नलिखित को ध्यान से पढ़िए और समझिए :

(क) सम्मान सूचक
जैसे — गांधीजी महान नेता थे।

(ख) अभिमान/अधिकार सूचक
जैसे — हम कहते हैं कि ऐसा काम यहाँ नहीं हो सकता।
पतन्जलि ने कहा है कि हमारे सिदधान्तों को कौन काट सकता है।

(ग) लोग, प्राण, दर्शन, होश, आँसू, ओठ, बाल (केश) आदि शब्दों का प्रयोग विशेष रूपसे बहुवचन में होता है।
जैसे — सिपाही को देखते ही चोर के होश उड़ गए।
लोग आ गए ।

(घ) समुदाय वाचक –

संज्ञा शब्दों के साथ 'गण, लोग, जन, वर्ग, वृन्द, समूह, समुदाय' आदि जोड़कर बहुतायत प्रकट करता है तो उनका प्रयोग बहुवचन में हो जाता है।

जैसे — प्रजाजन कष्ट में हैं।

खगवृन्द चहचहा रहे हैं।

- सामान्यत: व्यक्तिवाचक, द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाओं के बहुवचन नहीं होते।

****

D9R8K5

पाठ-अट्ठारह

मीराबाई

कवयित्री, जागीरदार, संरक्षण, वातावरण, ज्येष्ठ, माधुर्य-भाव, उपासना, दीवानी, मर्यादा, व्यतीत, यातना, प्याला, विरह, विष, सुधबुध, डिगना।

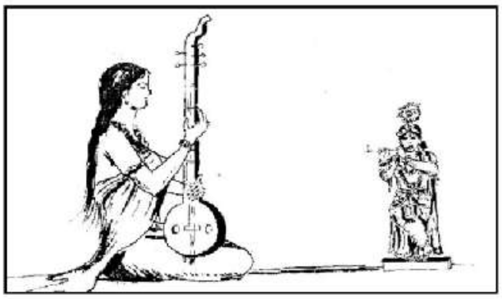

भारत की कृष्ण भक्त कवयित्रियों में मीराबाई का नाम सब से प्रसिद्ध है। उनका जन्म सन् 1504 ई० में हुआ था। उनके पिता रतन सिंह राजस्थान में मेड़ता के निकट कुड़की के जागीरदार थे। उनका सम्बन्ध राठौर वंश की मेड़तिया शाखा से था। जब वे दो वर्ष की थीं, तभी उनकी माँ का देहान्त हो गया। उनका पालन-पोषण मेड़ता में राव दूदा के संरक्षण में हुआ। उन दिनों राजस्थान में स्त्री-शिक्षा का प्रचलन बहुत कम था। मीरा को भी विधिवत् शिक्षा नहीं मिली। उनके आसपास कृष्ण-भक्ति का वातावरण था। उसके प्रभाव से वे भी कृष्ण की भक्त बन गईं।

मीराबाई का विवाह भोजराज से हुआ था। वे चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र थे। मीरा अपने पति के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने लगीं। दुर्भाग्यवश विवाह के सात वर्ष पश्चात् उनके पति भोजराज की मृत्यु हो गई। मीराबाई पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। उस काल में सती-प्रथा प्रचलित थी, लेकिन मीरा ने उसका पालन नहीं किया। इस तरह उन्होंने इस सामाजिक बुराई का विरोध किया।

पति की मृत्यु के बाद मीरा ने अपना जीवन कृष्ण-भक्ति में लगा दिया। वे माधुर्य-भाव से कृष्ण की उपासना करती थी। कृष्ण-प्रेम में दीवानी मीरा ने पुरानी कुल मर्यादाओं को तोड़ डाला। वे साधु संगति करने व कृष्ण-प्रेम के भजन गाने में अपना समय व्यतीत करने लगी। चित्तौड़ की गद्‌दी पर बैठे राणा विक्रमजीत सिंह को उनका व्यवहार बुरा लगा। उन्होंने मीरा को बहुत यातनाएँ दीं। फिर भी मीरा अपने मार्ग से नहीं डिगीं। राणा ने उनके पास विष का प्याला भेजा। वे कृष्ण का ध्यान करके उसे पी गई। वह विष उनके लिए अमृत बन गया।

मीराबाई के पदों का संग्रह 'मीराबाई की पदावली' नाम से प्राप्त है। उनमें कृष्ण के विविध रूपों का चित्रण है। सब से अधिक पद विरह-भाव से सम्बन्धित हैं। कहा जाता है कि वे अपने प्रियतम, कृष्ण के विरह में डूबी रहती थीं। विरह के पद गाते-गाते वे सुधबुध खो बैठती थीं।

मीराबाई वृन्दावन जाकर रहने लगी थीं। उसके बाद उन्हें लगा कि कृष्ण द्‌वारका चले गए हैं। तब वे द्‌वारका चली गईं। वहाँ रणछोड़जी के मन्दिर में भगवान की मूर्ति के सामने भजन-कीर्तन करने लगीं।

मीराबाई की मृत्यु सन् 1558 से 1563 ई० के बीच कभी हुई थी।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

निकट = पास, समीप।

जागीरदार = जिसे पुरस्कार के रूप में राज्य की ओर से जमीन मिली हो, सरदार, सामन्त।

देहान्त = मृत्यु, मरण।

संरक्षण = रक्षा करने की क्रिया, हिफाजत।

प्रचलन = चलन, गति।
ज्येष्ठ = सब से बड़ा।
उपासना = सेवा, आराधना, पूजा।
मर्यादा = प्रतिष्ठा।
यातना = अति कष्ट, पीड़ा।
सुधबुध = होश-हवास।

2. उत्तर दीजिए :

(क) मीराबाई का जन्म कब हुआ था?
(ख) मीराबाई के पिता कौन थे और उनका सम्बन्ध किस वंश से था?
(ग) मीराबाई का पालन-पोषण राव दूदा के संरक्षण में क्यों हुआ?
(घ) मीराबाई कृष्ण की भक्त कैसे बन गईं?
(ङ) भोजराज कौन थे?
(च) कब भोजराज की मृत्यु हो गई?
(छ) किस तरह मीराबाई ने सामाजिक बुराई का विरोध किया?
(ज) राणा विक्रमजीत सिंह को मीराबाई का व्यवहार क्यों बुरा लगा?
(झ) ''मीराबाई की पदावली'' में किसका चित्रण है?
(ञ) विरह के पद गाते-गाते मीरा क्या हो जाती थीं?
(ट) मीराबाई ने अपना अन्तिम जीवन कहाँ बिताया?
(ठ) मीराबाई की मृत्यु कब हुई?
(ड) मीराबाई जैसे कृष्णभक्त तीन कवियों के नाम लिखिए।
(ढ) मीराबाई के एक प्रसिद्ध पद के चार पंक्ति अन्य किताबों से ढूँढ़ कर लिखिए।
(ण) क्या आप भी मीराबाई की तरह अपना सब कुछ न्योछावर कर सकेंगे?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

संरक्षण ....

प्रचलन ....

विधिवत् ....

ज्येष्ठ ....

उपासना ....

मर्यादा ....

यातना ....

दीवानी ....

सुध-बुध ....

दुर्भाग्यवश ....

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) मीराबाई का पालन-पोषण मेड़ता में राव दूदा के संरक्षण में हुआ। ☐

(ख) आसपास की कृष्ण-भक्ति के प्रभाव से मीरा कृष्ण की भक्त बन गई। ☐

(ग) मीरा अपने पति के साथ दुखमय जीवन व्यतीत करती थीं। ☐

(घ) राणा विक्रमजीत ने मीरा के पास विष का प्याला भेजा। ☐

(ङ) मीरा विरह और संयोग के गीत गाती थीं। ☐

5. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) मीरा को भी विधिवत् .... ।

(ख) दुर्भाग्यवश विवाह के सात वर्ष पश्चात् .... ।

(ग) वे माधुर्य भाव से .... ।

(घ) वह विष उनके लिए.. ।

(ङ) विरह के पद गाते-गाते .... ।

6. निम्नांकित संज्ञा-शब्दों के विशेषण-रूप बनाकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

जैसे —

संज्ञा	विशेषण	वाक्य
सम्मान	सम्मानित	वह एक सम्मानित व्यक्ति है।
संरक्षण	संरक्षित	....
प्रचलन	प्रचलित	....
जीवन	....	....
विवाह	....	....
चित्रण	....	....
सम्बन्ध	....	....
समर्पण	....	....
लेखन	....	....

7. पढ़िए और समझिए :

मनुष्यों, वस्तुओं, स्थानों तथा भावों की तुलना विशेषण द्वारा की जाती हैं । तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती है, जैसे –

<u>मूलावस्था</u>	<u>उत्तरावस्था</u>	<u>उत्तमावस्था</u>
सुन्दर	अधिक सुन्दर	सबसे अधिक सुन्दर

उत्तरावस्था प्रकट करने के लिए मूल तत्सम विशेषणों के आगे 'तर' भी लगाया जाता है । जैसे- अधिकतर, सुन्दरतर, उच्चतर, निम्नतर आदि।

उत्तमावस्था को प्रकट करने के लिए मूल तत्सम विशेषणों के आगे 'तम' भी लगाया जाता है । जैसे- अधिकतम, सुन्दरतम, उच्चतम, निम्नतम आदि ।

****

F2Z9B7

पाठ-उन्नीस

कबीर के दोहे

आपा, औषधी, कटुक, स्रवन, संचरै, तिरसूल, काको, बलिहारी, साँचा, सूरिमा, कलेजे, छेक।

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन कूँ सीतल करे, आपहु सीतल होय।

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार द्वै संचरे, सालत सकल सरीर॥

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, बाको है तिरसूल॥

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागैं पाय।
बलिहारी गुरु आपणै, गोविन्द दिया बताय॥

सतगुरु साँचा सूरिमा, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही मैं मिलि गया, पड्या कलेजे छेक॥

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

औरन	=	दूसरा।
कूँ	=	को।
सीतल	=	शीतल, ठंडा।
कटुक	=	कटु, कड़ा, कठोर।
स्रवन दुवार	=	कान।
संचरै	=	फैलना, पहुँचना।
सालत	=	कष्ट देना, चुभोना।
सकल	=	सब, समस्त।
तोको	=	तुझे।
बुवै	=	बोना।
ताहि	=	उसको।
दोउ	=	दोनों।
काके	=	किसके।
बलिहारी	=	निछावर होना।
सतगुरु	=	अच्छा गुरु, परमात्मा।
साँचा	=	सच्चा।
सूरिमा	=	बहादूर, योदधा, पंडित।
सबद	=	शब्द, बानी।
जु	=	जो।
बाह्या	=	चलाया, मारा।

लागत	=	लगना, लगते ही।
पड़्या	=	पड़ा, पड़ना।
छेक	=	छेद डालना, छेदना, आरपार हो जाना।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कबीर कैसी बानी बोलने के लिए कहते थे?

(ख) कबीर मधुर वचन को क्या बताते थे?

(ग) कबीर के अनुसार कटु वचन कैसा होता है और उसका प्रभाव क्या होता है?

(घ) कबीर गुरु के प्रति अपने को निछावर करना क्यों चाहते थे?

(ङ) सतगुरु के बारे में कबीर क्या सोचते थे?

(च) कबीर के जीवन के बारे में अध्यापक से पूछकर पाँच वाक्य लिखिए।

(छ) पाठ के आधार पर कबीर को एक उपदेशक के रूप में कुछ वाक्य लिखिए।

(ज) कबीर के अनुसार गोविन्द से गुरु बड़ा होता है? क्या आप इसमें सहमत है?

3. नीचे की पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और सरल अर्थ लिखिए :

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, बाको है तिरसूल॥

....

....

....

4. कबीर के एक-एक दोहे को याद कीजिए और लिखिए।

5. पंक्तियाँ पूरी कीजिए :

मधुर बचन है औषधि...।

....,सालत सकल सरीर॥

....,काके लागैं पाय।

बलिहारी गुरु आपणै,...॥

****

M6F7Y4

पाठ-बीस

सुभाषचन्द्र बोस

निर्भीक, शूरवीर, जन्मजात, अत्यन्त, व्यक्तित्व, ओजस्वी, अत्याचार, सत्ता, नारा, सुविख्यात, आदत, मेधावी, दाखिल, वरीयता-क्रम, प्रतिक्रिया, तीव्र, नेतृत्व, अगुवाई, नजरबन्द, सख्त, अगाध, परिचायक, श्रेष्ठ, पहरा।

भारत माता को एक ऐसे निर्भीक, ज्ञानी, बुद्धिवान और साहसी सपूत मिले जो शूरवीर भी थे और जन्मजात नेता भी। देश के स्वाधीनता-संग्राम के महान सेनानियों में उनका नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। इस महान पुरुष का व्यक्तित्व आरम्भ से ही ओजस्वी और वीरतापूर्ण था। अन्याय और अत्याचार को वे देख नहीं सकते थे। सन् 1857 के बाद सर्वप्रथम भारतीयों को संगठित करके देश से विदेशी सत्ता को समूल उखाड़ फेंकने का प्रयत्न उसी शूरवीर ने किया था। आजतक भारत के कोने-कोने में उनका नारा ''जय हिन्द' गूँज रहा है। वे कोई और नहीं, सुभाषचन्द्र बोस ही थे।

भारत के सुयोग्य तथा सुविख्यात पुत्र सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई० को उड़ीसा के कटक नगर में हुआ था। उनके पिता रायबहादुर जानकीदास सरकारी वकील थे। उनकी माता का नाम प्रभावती देवी था।

सुभाष को पाँच वर्ष की आयु में कटक के एक प्रोटेस्टेन्ट स्कूल में भेजा गया। वे पढ़ने में बहुत तेज निकले। अध्यापक की बात ध्यान से सुनना, समय पर पाठ याद करना और अच्छी-अच्छी बातें सीखना बालक सुभाष की आदत थी। यही कारण है कि शीघ्र ही उनकी गिनती कक्षा के श्रेष्ठ और मेधावी छात्रों में होने लगी।

सुभाषचन्द्र ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। पिता की इच्छा का सम्मान करते हुए वे 15 सितम्बर, सन् 1919 की आई. सी. एस. परीक्षा के लिए केम्ब्रिज विश्वविद्याय में दाखिल हुए। उन्होंने आई.सी.एस. की परीक्षा भी सम्मानपूर्वक उत्तीर्ण की। वरीयता-क्रम में उनका चौथा स्थान था।

सुभाषचन्द्र बोस के पिता का विश्वास था कि उनका पुत्र ब्रिटिश सरकार के अधीन कोई बड़ा पद ग्रहण करेगा और उनका नाम ऊँचा करेगा। उन दिनों अनेक लोग अंगरेजों की नौकरी में ही सम्मान समझते थे, किन्तु सुभाष उनमें से नहीं थे। स्कूल में पढ़ते समय ही उन्होंने देख लिया था कि अंगरेज छात्र भारतीय छात्रों के साथ गुलामों जैसा बरताव करते थे। यहाँ तक कि अंगरेज अध्यापकों में से भी कुछ ऐसे थे, जो हिन्दुस्तानियों और हिन्दुस्तान की संस्कृति को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इससे सुभाष के बाल-मन में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। यही कारण था कि आई.सी.एस. परीक्षा पास करने के बाद भी उन्होंने सरकारी नौकरी नहीं की। वे अंगरेजों की गुलामी से घृणा करते थे और उन्हें देश से निकाल बाहर करना चाहते थे।

सुभाषचन्द्र बोस शीघ्र ही चित्तरंजनदास के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े। जब प्रिन्स ऑफ वेल्स ने भारत के दौरे का कार्यक्रम बनाया तो कांग्रेस ने उसका विरोध किया। इस विरोध की अगुवाई सुभाष ने की। अंगरेज सरकार ने उन्हें 10 दिसम्बर, 1921 को जेल में डाल दिया। तब से लेकर 1941 तक उन्हें देश की आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने के लिए कम से कम ग्यारह बार जेल भेजा गया। अन्त में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें घर में ही नजरबन्द करके उनपर सख्त पहरा बैठा दिया।

लेकिन सुभाष मानने वाले कहाँ थे! उन्होंने मन ही मन भारत से बाहर जाकर आजादी की लड़ाई लड़ने का निश्चय किया। 17 जनवरी, सन् 1941 को सुभाषचन्द्र एक मुसलमान फकीर के वेश में घर से निकल गए और बर्लिन जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने हिटलर से भेंट की। फिर उन्होंने सिंगापुर जाकर कप्टान मोहन सिंह और रासबिहारी बोस के साथ ''आजाद हिन्द फौज'' का कार्यभार सम्भाला। सुभाषचन्द्र की इस फौज ने ब्रिटिश सैनिकों के साथ अनेक स्थानों पर युद्ध किया। सुभाषचन्द्र ने अपनी वीरता और बुद्धिमत्ता से हमेशा अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाया। वे कहा करते थे, ''उस जंगल के पार, उन पहाड़ियों के पार हमारी मातृभूमि है। उसी की मिट्टी में हमने जन्म लिया है। वह हमें पुकार रही है। उठो, समय नष्ट न करो, हथियार सम्भालो और शत्रु की सेना से लोहा लेते हुए मातृभूमि की ओर जाने वाले मार्ग पर आगे बढ़ो। हमें अपनी मातृ भूमि को आजाद करना है।''

कहा जाता है, सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु एक हवाई दुर्धटना में हुई। फार्मोसा (ताइवान) द्वीप में उनका बोम्बर जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। लेकिन भारत में अनेक ऐसा लोग हैं, जो इस बात पर विश्वास नहीं करते। यह अपने प्रिय नेताजी के प्रति उनके अगाध प्रेम का परिचायक है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की अमर वाणी आज भी हमारे कानों में गूँज रही है - ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

निर्भीक	=	निर्भय, निडर।
शूरवीर	=	वीर व्यक्ति, योद्धा।
जन्मजात	=	जन्म से ही।

अत्यन्त	=	अत्यधिक, हद से ज्यादा।
ओजस्वी	=	ओज भरा, जोश पैदा करने वाला।
समूल	=	जड़ से, मूल सहित।
नारा	=	किसी माँग या शिकायत की ओर ध्यान दिलाने के लिए बार-बार बुलंद की जाने वाली सामूहिक आवाज।
सुविख्यात	=	बहुत प्रसिद्ध।
मेधावी	=	बुद्धिमान।
दाखिल	=	प्रविष्ट, शामिल।
वरीयता	=	श्रेष्ठता।
प्रतिक्रिया	=	किसी कार्य के परिणाम के रूप में होने वाला कार्य।
अगुआई	=	नेतृत्व, मार्गप्रदर्शन।
नजरबन्द	=	जो किसी स्थान में कड़ी निगरानी में रखा गया हो।
अगाध	=	अपार, अधिक।

2. उत्तर दीजिए :

(क) भारत माता को कैसे सपूत मिले?

(ख) भारत माता के महान सपूत का व्यक्तित्व आरम्भ से कैसा था?

(ग) यह महान सपूत कौन था?

(घ) सुभाषचन्द्र बोस का नारा क्या था?

(ङ) सुभाषचन्द्र बोस का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(च) उनके पिता क्या थे?

(छ) किस कारण बालक सुभाष की गिनती कक्षा के श्रेष्ठ और मेधावी छात्रों में होने लगी?

(ज) सुभाषचन्द्र ने किस विश्वविद्यालय से किस कक्षा की परीक्षा किस श्रेणी में उत्तीर्ण की?

(झ) सुभाषचन्द्र किस कार्य के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दाखिल हुए?

(ञ) सुभाषचन्द्र के प्रति उनके पिता का क्या विश्वास था?

(ट) अंगरेज छात्र भारतीय छात्रों के साथ कैसा बर्ताव करते थे?

(ठ) सुभाष के बाल-मन में तीव्र प्रतिक्रिया क्यों हुई?

(ड) सुभाषचन्द्र क्या करना चाहते थे?

(ढ) अंगरेज सरकार ने सुभाषचन्द्र को जेल में क्यों डाल दिया?

(ण) सुभाषचन्द्र को किस काम के लिए कितनी बार जेल भेजा गया?

(त) कब सुभाषचन्द्र घर से भाग निकले और कहाँ पहुँचे?

(थ) सुभाषचन्द्र ने सिंगापुर जाकर क्या किया?

(द) सुभाषचन्द्र क्या कहा करते थे?

(ध) सुभाषचन्द्र की मृत्यु के बारे में क्या कहा जाता है?

(न) सुभाषचन्द्र की अमर वाणी क्या है?

(प) 'आजाद हिन्द फौज' का झण्डा मणिपुर की किस जगह पर सर्वप्रथम फहराया गया था?

(फ) 'आजाद हिन्द फौज' के दो-तीन मणिपुरी सेनानियों के नाम लिखिए।

(ब) सुभाषचन्द्र बोस के समय आप 12-13 वर्ष के होते तो आप क्या करते?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

शुरवीर ....

ओजस्वी ....

मेधावी ....

दाखिल ....

प्रतिक्रिया ....

नेतृत्व ....

अगुवाई ....

नजरबन्द ....

अगाध ....

जन्मजात ....

4. सही कथन चुनिए और लिखिए :

(क) सुभाष के पिता रायबहादुर जानकीदास सरकारी वकील थे।

(ख) सुभाष ने बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

(ग) सुभाष अंगरेजों की गुलामी से घृणा करते थे।

(घ) ब्रिटिश सरकार ने सुभाष को घर में ही नजरबन्द करके रखा।

(ङ) सिंगापुर में सुभाष ने हिटलर से भेंट की।

(च) फार्मोसा द्वीप में सुभाष का बोम्बर जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

....

....

....

....

....

....

5. तालिका को ध्यान से देखिए, पढ़िए और खण्ड 'क' तथा 'ख' के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
बालक सुभाष	अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाया।
आई० सी० एस० के परीक्षा-परिणाम के	देश से निकाल बाहर करना चाहते थे।
सुभाष अंगरेजों को	हमारी मातृभूमि है।
सुभाष ने अपनी वीरता और बुद्धिमत्ता से	पढ़ने में बहुत तेज निकले।
उस जंगल के पार	वरीयता-क्रम में उनका चौथा स्थान था।

....

....

....

....

....

6. निम्नांकित बड़े लोगों के नारे लिखिए :

सुभाषचन्द्र बोस ....

बंकिमचन्द्र चटर्जी ....

भगत सिंह ....

लालबहादुर शास्त्री ....

7. पढ़िए और समझिए :

लोहा लेना — लड़ना, साहसपूर्वक सामना करना।

वाक्य : सुभाषचन्द्र ने अंगरेजों से लोहा लिया।

कम उम्र के एक लड़के ने डाकुओं से लोहा लिया।

8. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

'से ..... तक' के प्रयोग से स्थान और समय की क्रमश : दूरी और अवधि के आरंभ और अन्त की सीमा अर्थात कहाँ से कहाँ तक तथा कब से कब तक का बोध होता है। जैसे —

गुजरात से मणिपुर तक हिन्दी समझी जाती है।

इम्फाल से चुड़ाचांदपुर तक की दूरी 66 कि. मी. है।

घर से स्कूल तक पैदल जाओ।

सुबह से शाम तक सभा होगी।

यह कार्यक्रम सुबह 8 बजे से 10 बजे तक चलेगा।

कल से आज तक कोई नहीं आया।

****

G7C5G8

पाठ-इक्कीस

मैं कम्प्यूटर हूँ

बक्सा, पोथा, संगणक, पुर्जा, फायदा, मॉनीटर, आलसी, गुर, मर्जी, वायुयान, अन्तरिक्ष-यान, इण्टरनेट, जरिया, बैटरी, इस्तेमाल, कार्य-क्षमता, मस्तिष्क, सृष्टि।

मैं बक्से के आकार से मिलता-जुलता एक यन्त्र हूँ, मगर मुझे साधारण मशीन समझने की भूल न करना। मेरे अन्दर ज्ञान और कौशल का भण्डार जमा हुआ है। इनके सहारे मैं कोई भी सवाल तुमसे पहले हल कर सकता हूँ। जितनी संख्याएँ मुझे आती हैं, उतनी तुम्हारे लिए याद रखना असंभव है। मुझे और भी बहुत से काम आते हैं। सब बताने लगूँ तो एक बड़ा पोथा तैयार हो जाएगा। अभी रहने दो, पहले तुम्हें अपने बारे में कुछ दूसरी बातें सुनाऊँगा!

मुझे हिन्दी में संगणक और अंगरेजी में कम्प्यूटर कहते हैं। मेरा निर्माण सब से पहले सन् 1944 में हावर्ड आइकेन ने किया था। यह आधुनिक सभ्यता के इटिहास की सब से महान और आश्चर्यजनक घटना थी। जब पुर्जे-पुर्जे जोड़ कर मेरा निर्माण किया जा रहा था, तब मुझे भी अपने भविष्य के बारे में अधिक पता नहीं था। मैं सोचता था कि शायद मुझे बनाने वाला आदमी गणित के सवालों से डरता है। वह चाहता है कि उसके सवाल मैं हल करूँ और वह टाँग पर टाँग रखकर सोए। मुझे बड़ा अजीब लग रहा था। फिर भी मैं आदमी के हाथ नहीं पकड़ सकता था। वह मुझे बनाता रहा। आखिर उसका सपना पूरा हुआ।

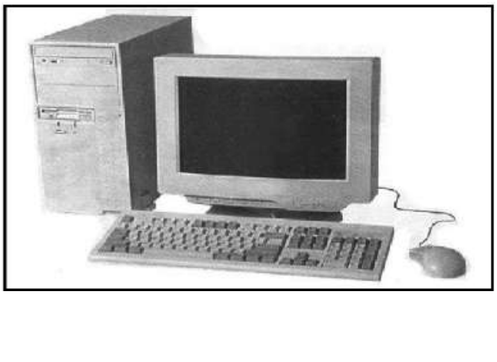

आदमी ने एक अन्य यन्त्र भी बनाया, जो देखने में टी० वी० जैसा लगता था। इसका नाम मॉनीटर रखा गया। मैंने देखा कि आदमी ने एक तार के सहारे मुझे और मॉनीटर को जोड़ दिया। इसका फायदा यह हुआ कि मेरे हल किए सवाल मॉनीटर पर साफ-साफ दिखाई देने लगे। आदमी खुशी के मारे फूला न समाया।

एक और बात भी हुई। मुझे बनाने वाला आदमी चित्रकला तो जानता था, लेकिन वह आलसी था। उसने सोचा कि यदि मैं उसके लिए चित्र भी बना दूँ तो कितना अच्छा हो। एक दिन मौका पाकर वह मुझसे बोला —

''क्या तुम चित्रकला के गुर सीखना चाहते हो?''

''क्यों नहीं! मैं तो ज्ञान के भण्डार का स्वामी बनना चाहता हूँ।''

''तो ठीक है, मैं तुम्हें चित्रकला सिखाऊँगा।''

''अवश्य। मैं सीखूँगा।''

''क्या आज से ही शुरू करें?''

''जैसी आपकी मर्जी !''

इतना सुनते ही आदमी ने मुझे चित्रकला और डिजाइनिंग की मूल बातें सिखानी शुरू कर दी। मैंने पूरा पाठ बहुत जल्दी सीख लिया और आदमी की-बोर्ड के सहारे मुझसे तरह-तरह के चित्र बनवाने लगा। तुम्हें शायद पता हो कि एक मिनट की कार्टून फिल्म के लिए 1440 चित्रों की आवश्यकता होती है। फिर सोचो, दो-ढाई घण्टे की फिल्म हो तो कितने चित्र जरूरी होंगे? इतने सारे चित्र बनाने में आदमी को नानी याद आ जाए। मेरे लिए तो यह बाएँ हाथ का खेल है। आदमी ने मेरी मदद से चित्र बनाकर बहुत नाम कमाया।

सोचो, मेरे बनाए चित्र आदमी के होथों में किस तरह पहुँचते होंगे? नहीं समझे! अरे भाई, प्रिण्टर नाम की एक और मशीन बनाई गई और एक तार से उसे भी मुझसे जोड़ दिया । अब क्या था ! मेरे बनाए चित्र स्क्रीन पर दिखाई देते और प्रिण्टर पर छप कर बाहर निकल आते। इसके बाद तो मैं किताबों की छपाई और वस्त्रों की डिजाइनिंग में भी आदमी का हाथ बँटाने लगा।

धीरे-धीरे आदमी मुझसे छोटे-बड़े अनेक काम लेने लगा। मैं कारखानों में बने माल की जाँच करने लगा, वायुयान, रॉकेट अन्तरिक्ष-यान चलाने में काम आने लगा, यहाँ तक कि मौसम सम्बन्धी सूचनाओं के विश्लेषण तथा अनेक रोगों की जाँच का कार्य भी करने लगा। इधर काम के साथ मनोरंजन की सुविधा जुटाने में भी मैं पीछे नहीं रहा। बच्चे मेरे पास आकर तरह-तरह के खेल खेलने लगे। जब भी बच्चे मेरे पास दौड़े आते और खेल खेलते तो मैं भी बड़ा खुश होता।

फिर इण्टरनेट की व्यवस्था का विकास हुआ। इसका नायक भी मुझे ही बनाया गया। मैं हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्तियों के बीच संदेशों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करने लगा। इण्टरनेट के ज़रिए लोग दोस्ती ही नहीं, शादी भी करने लगे। मुझे अपने पर गर्व होने लगा।

आदमी पहले मुझे बिजली से चलाता था। फिर उसने बैटरी का इस्तेमाल शुरू कर दिया। मैंने कोई विरोध नहीं किया। तब आदमी ने मेरा आकार इतना छोटा कर दिया कि मैं किसी की जेब में बैठ सकता था। ऐसा होने पर भी मेरी कार्य-क्षमता पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। वह तो बढ़ती ही गई। भला, काम से क्या जी चुराना !

यह सब होने पर भी इतना जरूर कहूँगा कि मैं आदमी से बड़ा नहीं हूँ। आदमी ही मुझसे बड़ा है। मैं आदमी के मस्तिष्क की बराबरी नहीं कर सकता। मैं क्या, कोई भी यन्त्र आदमी को नहीं हरा सकता। आदमी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

पोथा	=	बड़ी पुस्तक, ग्रन्थ।
पुर्जा	=	अवयव, अंग।
अजीब	=	अद्भुत, अनोखा।
आलसी	=	सुस्त, काहिल।
गुर	=	युक्ति, उपाय।
वायुयान	=	हवाई-जहाज, एरोप्लेन।
अन्तरिक्ष-यान	=	रॉकेट।
इस्तेमाल	=	प्रयोग।
मस्तिष्क	=	भेजा, दिमाग।

2. उत्तर दीजिए :

(क) कम्प्यूटर को हिन्दी में क्या कहा जाता है?

(ख) सब से पहले कम्प्यूटर का निर्माण कब और किसने किया था?

(ग) मॉनीटर क्या है?

(घ) मॉनीटर से क्या फायदा होता है?

(ङ) एक मिनट की कार्टून फिल्म के लिए किसकी आवश्यकता होती है?

(च) प्रिण्टर से क्या काम होता है?

(छ) कम्प्यूटर से क्या-क्या काम होते हैं?

(ज) इण्टरनेट के विकास के साथ कम्प्यूटर से और क्या-क्या काम होने लगे?

(झ) कम्प्यूटर किसके द्वारा चलाया जाता है?

(ञ) इस प्रकार के अतिआधुनिक तकनीकी पर तैयार किए एक कम्प्यूटर का नाम लिखिए।

(ट) "कम्प्यूटर ने विश्व की दूरी कम कर दी"। इस पर पाँच वाक्य लिखिए।

(ठ) कम्प्यूटर की लाभ और हानि पर कल्पना कीजिए और लिखिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

फायदा ....

आश्चर्यजनक..

भण्डार ....

मर्जी ....

जाँच ....

विश्लेषण..

इस्तेमाल ....

सर्वकालिक ....

4. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) आदमी की-बोर्ड के सहारे कम्प्यूटर से .... ।

(ख) आदमी ने कम्प्यूटर की मदद से .... ।

(ग) धीरे-धीरे आदमी कम्प्यूटर से .... ।

(घ) बच्चे कम्प्यूटर के पास आकर .... ।

(ङ) आदमी पहले कम्प्यूटर को .... ।

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(क) कम्प्यूटर बक्से के आकार से मिलता-जुलता एक यन्त्र है। ☐

(ख) कम्प्यूटर का निर्माण आधुनिक सभ्यता के इतिहास की एक सामान्य घटना थी। ☐

(ग) आदमी ने एक तार के सहारे कम्प्यूटर और मॉनीटर को जोड़ दिया। [ ]

(घ) इण्टरनेट का नायक कम्प्यूटर को ही बनाया गया। [ ]

(ङ) कम्प्यूटर केवल बिजली से ही चलता है। [ ]

6. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) तुम जितना माँगते हो, उतना .... ।

(ख) जितना वह चाहता है, उतना .... ।

(ग) जितना तू बताएगा, उतना .... ।

(घ) जितना मैं कहूँगा, उतना .... ।

7. अर्थ लिखिए :

पोथा = ...

अजीब = ...

गुर = ...

जरिया = ...

इस्तेमाल = ...

मस्तिष्क = ...

पुर्जा = ...

8. ध्यान से पढ़िए और याद रखिए :

विभिन्न कारकों के विभक्ति-चिह्नों के प्रयोग से सर्वनाम शब्दों के रूपों में परिवर्तन होता है। जैसे —

उससे, उसके द्वारा, उनसे, उनके द्वारा, मैंने, हमने, तुझे, तुझको, तुम्हें, तुमको, आपको, आपके लिए, आप लोगों को, आप लोगों के लिए, किसीका,

किसी के, किसी की, किन्होंका, किन्हों के, किन्हों की, जिसमें, जिसपर, जिनमें, जिनपर, आदि।

- प्रश्नवाचक सर्वनाम 'क्या' का बहुवचन रूप नहीं है।
- निजवाचक सर्वनाम 'आप' का रूप एक वचन और बहुवचन दोनों में समान होता है।
- सर्वनामों में सम्बोधन कारक नहीं होता।

9. विभक्ति चिह्न युक्त शब्द लिखिए :

		एकवचन	बहुवचन
मैं + को	=	....	....
वह + के द्वारा	=	....	....
यह + का	=	....	....
कुछ + से	=	....	....
कौन + में	=	....	....
क्या + की	=	....	....

****

S1P6E9

पाठ-बाईस

सवाल

परिधान, धारण, समवेत, बवाल, विधान, आवाज, संविधान, अपमान, चुनौती, स्वीकार, ढाल, मुद्रा, विस्तार, ताकत, बुदिधमती, धीर, जौहर, निज, त्याग, अनिवार्य, उन्नति, चलन, नेपथ्य, शोर, प्रतीत, छितराना, दोहराना, पछताना।

[मंच पर लड़के-लड़कियों का एक दल रंग-बिरंगे परिधान धारण किए उछलता-कूदता प्रवेश करता है।]

समवेत : आज का सवाल क्या है? बोलो तो !
सवाल का बवाल क्या है? बोलो तो !
[इन पंक्तियों को दोहराते हुए सभी बच्चे पूरे मंच का एक चक्कर लगाते हैं और इधर-उधर छितरा कर खड़े हो जाते हैं।]

लड़की एक : आज का सवाल बड़ा भारी है।
नर बड़ा है या बड़ी नारी है !
[सभी पात्र इन पंक्तियों को तीन बार दोहराते हैं।]

लड़का एक : बड़ा न छोटा कोई भी है सब समान हैं।
नया जमाना है इसका यही विधान है।।
[सभी पात्र इन पंक्तियों को दो बार दोहराते हैं।]

आकाशवाणी : (गम्भीर आवाज) ऐसा कभी नहीं हो सकता। स्त्री-पुरुष समान नहीं हो सकते ....।

लड़की एक : क्यों नहीं हो सकते?

समवेत : क्यों नहीं हो सकते स्त्री-पुरुष समान?
स्त्री-पुरुष समान हैं कहता संविधान।

आकाशवाणी : पुराने जमाने से ऐसा ही चला आ रहा है। स्त्री पुरुष से निर्बल होती हैं, फिर वह पुरुष की बराबरी कैसे कर सकती है?

लड़का एक : निर्बल कह कर जो नारी का अपमान करेगा।
[सभी बच्चे शामिल हो जाते हैं।]

समवेत : निर्बल कह कर जो नारी का अपमान करेगा।
पछताएगा, पाप करेगा, दण्ड भरेगा।
तुम्हें चुनौती हम देते स्वीकार करो।
इसी समय तुम अपना कहना सिद्ध करो।

आकाशवाणी : ठीक है, मुझे तुम लोगों की चुनौती स्वीकार है। (आवाज देने का स्वर) पाखङ्बा ऽऽऽ..., चले आओ। (पाखङ्बा के वेश में ढाल-तलवार लिए एक लड़का आता है और वीर की मुद्रा में मंच के बीचोंबीच खड़ा हो जाता है)।

आकाशवाणी : यह है पाखङ्बा। हमारा पहला राजा। कोई है दुनिया में, इसकी वीरता की बराबरी कर सके?

आकाशवाणी : (आवाज देने का स्वर) पामहैबा ऽऽऽ..., जरा आना तो। (पामहैबा के रूप में एक लड़के का प्रवेश। पाखङ्बा के पास खड़ा हो जाता है)। देखो, इसे देखो। यह पामहैबा है, जिसने हमारे राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। कौन कर सकता है इसकी बराबरी?

आकाशवाणी : (आवाज देने का स्वर) खम्बा ऽऽऽ..., तुम भी आ जाओ। (खम्बा के रूप में एक लड़के का प्रवेश। पाखङ्बा और पामहैबा के पास खड़ा हो

जाता है)। खम्बा, बाघ से लड़ने की ताकत रखने वाला। प्रेम और वीरता की मूर्ति। अब कहो, क्या कहते हो?

लड़की एक : लिन्थोइङम्बी महारानीजी, जरा आइए। (लिन्थोइङम्बी के रूप में एक लड़की का प्रवेश। पाखङ्बा, पामहैबा और खम्बा से थोड़ा हट कर खड़ी हो जाती है)।

समवेत : मणिपुर की ये अमर वीर हैं।
बुदि्धमती हैं और धीर हैं।
राज्य पर जब शत्रु चढ़ आया।
इन्होंने अपना जौहर दिखलाया।
अपने दम पर राज्य बचाया।

लड़की एक : थम्बालनु को हम पुकारते, हम पुकारते। (थम्बालनु के रूप में एक लड़की आकर लिन्थोइङम्बी के पास खड़ी हो जाती है)।

समवेत : मातृभूमि हित कितना साहस दिखलाया।
थम्बालनु ने मौत को भी गले लगाया।
त्याग दिया निज प्रेम प्रजा की हुई भलाई।
कौन दूसरा? जिसने इतनी हिम्मत दिखाई॥

लड़की एक : थोइबी ऽऽऽ..., तुम भी आ जाओ, आ जाओ। (थोइबी के रूप में एक लड़की का प्रवेश। थम्बालनु और लिन्थोइङम्बी के पास खड़ी हो जाती है)।

समवेत : अमर प्रेम की अमर निशानी।
अमर प्रेम की अमर कहानी।
बाधाओं से लड़ने वाली।
सत्य-मार्ग पर चलने वाली।

प्रेम हेतु बलिदान हो गई।
थोइबी नारी महान हो गई।

लड़की एक : अब भी क्या तुम और चुनौती दोगे?

समवेत : अब भी क्या तुम और चुनौती देगी?
या फिर अपनी हार स्वीकार करोगे !
छिपने वाले सामने आओ, सामने आओ।
थोड़ा हमको अपना तुम रूप दिखाओ ॥

आकाशवाणी : (निराश भरे स्वर में) मैं हार गया मेरे बच्चो। मैं मानता हूँ कि स्त्री और पुरुष समान हैं। समान होना ही अनिवार्य है, इसके बिना समाज की उन्नति नहीं हो सकती। लेकिन मैं तुम्हारे सामने नहीं आ सकता, क्योंकि मैं पुराने जमाने का चलन हूँ। तुम नए जमाने के दीपक हो। मैं तुम्हारा सामना कैसे करूँगा। मैं जा रहा हूँ।
(नेपथ्य में शोर की आवाज होती है, जो धीरे-धीरे दूर जाती प्रतीत होती है)।

समवेत : बड़ा न छोटा कोई भी है, सब समान हैं।
नया जमाना है, इसका यही विधान है ॥
(धीरे-धीरे पर्दा गिरता है)।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

परिधान	=	पहनने का कपड़ा।
समवेत	=	संयुक्त, मिला हुआ।
बवाल	=	संकट, समस्या, परेशनी, मुसीबत।
छितराना	=	बिखरना, अलग-अलग होना।
जमाना	=	समय, काल।
विधान	=	प्रबन्ध, व्यवस्था, प्रणाली, काम करने का ढंग ।
निर्बल	=	शक्तिहीन, कमजोर।
अपमान	=	बेइज्जती, अनादर।
पछताना	=	कोई अनुचित कार्य करके बाद में उसके लिए दुखी होना।
चुनौती	=	ललकार, आमन्त्रण।
सिद्ध	=	प्रमाणित, निश्चित।
ढाल	=	तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे या चमड़े का बना कछुए की पीठ जैसा एक साधन।
मुद्रा	=	मुखचेष्टा; मुख, हाथ, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति।
धीर	=	धैर्ययुक्त, दृढ़ गम्भीर।
जौहर	=	वीरता, बलिदान।
दम	=	ताकत, जोर।
हिम्मत	=	साहस, वीरता, बहादुरी।
चलन	=	रिवाज, रीति, चाल।

2. उत्तर दीजिए :

(क) स्त्री-पुरुष के बारे में संविधान क्या कहता है?

(ख) आकाशवाणी ने स्त्री और पुरुष की बराबरी न होने का क्या कारण बताया?

(ग) स्त्री को निर्बल कह कर अपमान करने का परिणाम क्या होगा?

(घ) आकाशवाणी पाखङ्बा, पाम्हैबा और खम्बा के बारे में क्या-क्या बताती है?

(ङ) लिन्थोइङम्बी, थम्बालनु और थोइबी के साहस के बारे में क्या-क्या बताया जाता है?

(च) आकाशवाणी ने हार मानते हुए क्या कहा?

(छ) इस पाठ में लेखक स्त्री-पुरुष समानता के बारे में चर्चा करने में जिन तीन स्त्री विशेष के नाम उल्लेख करते है, उनमें आप किस-किस के नाम जोड़ना चाहेंगे?

(ज) 'बड़ा न छोटा कोई भी है, सब समान है !
नया जमाना है, इसका यही विधान है'।।
क्या लेखक के इस कथन से आप सहमत है? लिखिए।

(झ) स्त्री के अधिकार के बारे मे अध्यापक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

परिधान ....

अपमान ....

चुनौती ....

विधान ....

मुद्रा ....

धीर ....

त्याग ....

अनिवार्य ....

चलन ....

4. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (✘) का निशान लगाइए :

(क) पाखङबा हमारा पहला राजा है। ☐

(ख) पामहैबा ने हमारे राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। ☐

(ग) खम्बा प्रेम और वीरता की मूर्ति है। ☐

(घ) लिन्थोइङम्बी खम्बा के पास खड़ी हो जाती है। ☐

(ङ) थम्बालनु ने मौत को गले लगाया। ☐

(च) थोइबी अमर प्रेम की निशानी है। ☐

5. ध्यान से पढ़िए और समझिए :

''क्या'', ''कैसे'', ''क्यों'', ''कब'', ''कहाँ'', ''कितना'', आदि हिन्दी के प्रश्नवाचक शब्द हैं। इनका प्रयोग निम्नप्रकार है —

क्या	—	यह क्या है?
		क्या तुम नहीं खाओगे?
		क्या मोहन चोर है?
कौन	—	वह कौन है?
		कौन आएगा?
		कौन जा रहा है?
कैसा	—	वह कैसा आदमी है?
		कैसे आओगे?
		यह सब कैसे हुआ?

क्यों	—	तुम यहाँ क्यों आए हो?
		उसने क्यों ऐसा किया?
		क्यों उसको मारा गया?
कब	—	परीक्षा कब है?
		तुम कब आ रहे हो?
		कब तक यह स्थिति रहेगी?
कहाँ	—	खेल कहाँ होगा?
		वे कहाँ गए?
		तुम्हारा घर कहाँ है?
कितना	—	कितने लोग आएँगे?
		तुम्हें कितने रुपए चाहिए।
		आपने यह कपड़ा कितने में खरीदा?

6. निम्नांकित शब्दों का प्रयोग करते हुए एक-एक प्रश्नवाचक वाक्य बानइए:

कौन ....

क्यों ....

कैसा ....

कहाँ ....

कब ....

कितना ....

7. ध्यान से पढ़िये और समझिए :

– तुम कम्प्यूटर हो?

– हाँ।

इस प्रश्नोत्तर वार्तालाप में दो पंक्तियाँ हैं। पहली पंक्ति में एक से अधिक शब्दों का एक समूह है और दूसरी पंक्ति में केवल एक शब्द है। लेकिन दोनों पंक्तियों में किसी न किसी पूर्ण अर्थ प्रकट किया जाता है। ऐसा सार्थक शब्द या शब्द-समूह जो पूर्ण अर्थ प्रकट कर सके, उसे वाक्य कहा जाता है।

वाक्यों का वर्गीकिण दो दृष्टियों से किया जाता है, जैसे —

क) अर्थगत दृष्टि

ख) रचनागत दृष्टि

यह एक कम्प्यूटर है।

उसने कहा कि मुझे एक कम्प्यूटर दीजिए।

उपर्युक्त वाक्यों में दो दृष्टियाँ पाई जाती हैं। पहले वाक्य में केवल एक बात के होने का भाव प्रकट किया जाता है और दूसरे वाक्य में दो वाक्यों का मिश्रित रूप देखा जाता है। जब किसी वाक्य में एक बात के होने या न होने का भाव प्रकट होता है तो उसका अर्थगत दृष्टि से वर्गीकरण किया जा सकता है और वाक्य को रचना की दृष्टि से सरल, संयुक्त और मिश्रित रूप देखा जाता है तो वह रचनागत दृष्टि द्वारा किया गया वर्गीकरण है ।

****

नागरिकों के मूल कर्तव्य

प्रत्येक नागरिक ––

क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।

घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

च. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्दर वन, झील, नदी और वन्य-जीव हैं — रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे।

ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

अध्यापकों के लिए निर्देश

नागरिकों के इन मूल कर्तव्यों का विधान भारत के संविधान के भाग-IV — क के अनुच्छेद 51 में किया गया है। यहाँ उन्हें "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद" द्वारा 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' शीर्षक पुस्तक के पृ. 35 एवं 36 से ग्रहण करके प्रस्तुत किया गया है।

विषय अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह छात्रों से कक्षा में इनका बार-बार पाठ कराए, व्याख्या करके समझाए और कण्ठस्थ कराए।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।